



॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥



युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज
के जीवन से जुड़े हुए...

108

पावन प्रशंसा



प्रस्तुतकर्ता
'साधक'

प्रेमप्रकाशी संत मोनूराम
श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के
जीवन से जुड़े हुए

108

पावन प्रसंग

संकलन एवं सम्पादन

‘साधक’

प्रेमप्रकाशी संत मोनूराम

श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

सद्गुरु स्वामी टेऊराम गुण गाथा-2

संत होते हैं, कृपा-निधान

(सूर श्याम बालक बना पारंगत गायक)

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज संत मण्डली के साथ कहीं जा रहे थे। मार्ग में एक सूरदास भिखारी बालक दिखाई दिया। वह बालक बड़े ही मीठे स्वर में भजन की पंक्तियाँ गाकर भीख माँग रहा था। युगपुरुष गुरुदेव स्वामी जी ने उसे देखा। स्वामी जी उस बालक के पास गये। सिर पर हाथ रखकर बड़े दुलार – प्यार से पूछा- बेटा! ‘यह भीख माँगने का तुच्छ कार्य क्यों कर रहे हो’? बालक ने कहा- ‘बाबा जी! रोटी खाने के लिये... अगर ऐसा कार्य नहीं करूँगा... तो घर वाले मुझे भोजन (रोटी) नहीं देंगे।’

सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का दिल पसीज गया और उस बालक के ऊपर दया आ गई। महापुरुष तो कृपा निधान, दया के सागर होते हैं, उनसे किसी का दुःख- दर्द देखा नहीं जाता। तब स्वामी जी ने कहा- बेटे! केवल रोटी के लिए ये ‘भीख माँगने’ जैसा तुच्छ काम कर रहे हो। चलो ! हमारे साथ- आश्रम पर सेवा करो, भरपूर भोजन – प्रसाद पाओ और भजन – सुमरण करो। इतना सुनकर बालक प्रसन्न हो गया और स्वामी जी के साथ आश्रम पर आ गया।

बालक के सूरदास होने के कारण किसी संत- सेवाधारी ने स्वामी जी से कहा- ‘कौन इसका ध्यान रखेगा? कौन इसकी सेवा करेगा? तब वात्सल्य भाव से करुणा निधान सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने कहा- ‘सभी में प्रभु- परमात्मा निवास करते हैं। हम सब उसी की संतान हैं। इस बालक की सेवा “मैं” स्वयं करूँगा और इसका ध्यान भी रखूँगा।’ ऐसा सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। देखो! दिव्य महापुरुषों की करुण- निर्मानता, कितना स्नेह, कितना दुलार!

कहते हैं – कि स्वामी जी की उस बालक के ऊपर इतनी अनन्य कृपा हुई कि वह सूरदास बालक आगे चलकर एक पारंगत गायक (गवैया) बन गया और जीवन भर गुरु आश्रम की खूब तन मन से सेवा करता रहा... नित्य नये- नये भजन गाकर सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज को सुनाता रहा। ऐसी होती है महापुरुषों की दिव्य विलक्षण कृपा!

शत्रु-शत्रु नमन – धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-2

संत होते हैं, कृपा-निधान

(सूर श्याम बालक बना पांरगत गायक)

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज संत मण्डली के साथ कहीं जा रहे थे। मार्ग में एक सूरदास भिखारी बालक दिखाई दिया। वह बालक बड़े ही मीठे स्वर में भजन की पंक्तियाँ गाकर भीख माँग रहा था। युगपुरुष गुरुदेव स्वामी जी ने उसे देखा। स्वामी जी उस बालक के पास गये। सिर पर हाथ रखकर बड़े दुलार – प्यार से पूछा- बेटा! ‘यह भीख माँगने का तुच्छ कार्य क्यों कर रहे हो’? बालक ने कहा- ‘बाबा जी! रोटी खाने के लिये... अगर ऐसा कार्य नहीं करूँगा... तो घर वाले मुझे भोजन (रोटी) नहीं देंगे।’

सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का दिल पसीज गया और उस बालक के ऊपर दया आ गई। महापुरुष तो कृपा निधान, दया के सागर होते हैं, उनसे किसी का दुःख- दर्द देखा नहीं जाता। तब स्वामी जी ने कहा- बेटे! केवल रोटी के लिए ये 'भीख माँगने' जैसा तुच्छ काम कर रहे हो। चलो ! हमारे साथ- आश्रम पर सेवा करो, भरपूर भोजन - प्रसाद पाओ और भजन -सुमरण करो। इतना सुनकर बालक प्रसन्न हो गया और स्वामी जी के साथ आश्रम पर आ गया।

बालक के सूरदास होने के कारण किसी संत-सेवाधारी ने स्वामी जी से कहा- 'कौन इसका ध्यान रखेगा? कौन इसकी सेवा करेगा? तब वात्सल्य भाव से करुणा निधान सद्गुरु स्वामी टेजूराम जी महाराज ने कहा- 'सभी में प्रभु-परमात्मा निवास करते हैं। हम सब उसी की संतान हैं। इस बालक की सेवा "मैं" स्वयं करूँगा और इसका ध्यान भी रखूँगा।' ऐसा सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। देखो! दिव्य महापुरुषों की करुण-निर्मानता, कितना स्नेह, कितना दलार!

कहते हैं – कि स्वामी जी की उस बालक के ऊपर इतनी अनन्य कृपा हुई कि वह सूरदास बालक आगे चलकर एक पारंगत गायक (गवैया) बन गया और जीवन भर गुरु आश्रम की खूब तन मन से सेवा करता रहा... नित्य नये- नये भजन गाकर सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज को सुनाता रहा। ऐसी होती है महापुरुषों की दिव्य विलक्षण कृपा!

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥
ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥
ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥
ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥
ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

भगवान की होटल (अतिथि सेवा)

S. M. R.

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਊਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-5

अतिथि देवो भवः

युगपुरुष सगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज में निर्मानता के साथ – साथ सेवा का भी विशेष गुण था। किसी भी सेवा कार्य में वे कभी भी शर्म महसूस नहीं करते थे। कितनी भी पद – प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाने पर भी वे कभी सेवा से पीछे नहीं हटे। ऐसा उनके जीवन काल में अनेको बार देखा गया। गुरु महाराज जी में कथनी के साथ साथ करनी भी विद्यमान थी।

एक समय की बात है। दोपहर का समय था। कुछ अतिथि सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का दर्शन व सतसंग श्रवण करने के लिए श्री अमरापुर दरबार 'डिब' पर आये। उन्होंने कभी गुरु महाराज जी के दर्शन तक नहीं किये थे— उनका नाम – यश – कीर्ति सुनकर ही दर्शन करने के लिए आये थे। दिन के समय सभी संत-सेवादारी विश्राम कर रहे थे। उस समय गुरु महाराज जी ही जाग रहे थे। वे अतिथि स्वामी जी से मिले और पूछा— भक्तवत्सल सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज कहाँ हैं? हम सब उनके दर्शनों के लिए बहुत दूर से आये हैं।

इस पर गुरु स्वामी जी ने कहा- ‘पहले आप लोग भोजन प्रसाद ग्रहण करो... विश्राम कर लो... शाम को दर्शन कर लेना।’ उस समय स्वयं स्वामी जी ने अपने हाथों से साफ – सफाई कर भोजन खिलाया, जल पिलाया और आराम के लिए आसन दिया।

दूसरों को उपदेश करना कितना सरल होता है किन्तु स्वयं उस पर चलना होता है बड़ा कठिन... परन्तु स्वामी जी में कथनी और करनी एक समान थी।

सांयकाल जब अतिथि स्वामी जी के दर्शन करने पहुँचे, तो देखकर हैरान हो गए- अरे! इन्होंने ही तो दोपहर को हमारी सेवा की थी- भोजन खिलाया, जल पिलाया और आसन दिया।

ऐसे निर्मानी संत - महापुरुष के दर्शन करके हम तो धन्य- धन्य हो गए.... हमारा जीवन सफल हो गया।..

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ੍ਵਾਮੀ ਟੇਙ੍ਗਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-6

गुरु भक्ति (सेवा) का फल

(श्री गुरुदेव की चरण पादुका मस्तक पर धारण करके लाना)

शास्त्रों में सेवा का बड़ा महत्व बतलाया गया है। सेवा भी एक प्रकार की ईशभक्ति होती है। गुरु की सेवा यानि भगवान की सेवा। निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा समय पर अवश्य ही फलीभूत होती है। तन के द्वारा की गई सेवा अहंकार व अभिमान को चूर करती है। युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज भी गुरु की सेवा तन्मयता श्रद्धा – भाव से किया करते थे। जिसके फलस्वरूप आज उनका इतना यशोगान हो रहा है। ये सब सेवा का ही फल है। सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती। समय पर अवश्य ही फलीभूत होती है।

सिन्ध प्रदेश में एक समय बड़ी भारी सत्संग सभा लगी हुई थी – दादा गुरुदेव साईं आसूराम जी महाराज के मुखारविन्द द्वारा हजारों श्रद्धालुजन सत्संग गंगा का अमृत पान कर रहे थे। सत्संग समाप्ति पर गुरुदेव दादा आसूराम जी महाराज ने स्वामी जी से कहा– किसी सेवादारी से कह दो– कि हमारे जूते (चरण पादुका) ले आए... श्री गुरुदेव की आज्ञा शिरोधार्य कर स्वयं स्वामी जी चरण पादुका मस्तक पर रखकर भरी सभा में श्री गुरुदेव के पास लेकर आए।

मेले में गुरु आसूराम ने - जूता जब मँगवाया ।
खुद ही लेकर चरण पादुका - पल में टेऊँ आया ।
गुरु जी तुम पे, थे बलिहार - तुम थे सेवा के अवतार ।
तुम्हारी गुरु सेवा भक्ति को है प्रणाम ॥

दादा गुरुदेव साईं आसूराम जी महाराज ने जब स्वामी जी को चरण पादुका मस्तक पर लाते हुए देखा... बड़े गद्गद् हो गये। बड़ा आश्चर्य भी हुआ और स्वामी जी को प्रेम भाव पूर्वक अपने हृदय से लगा लिया। दादा गुरु साईं मन ही मन सोचने लगे – ‘टेऊँ’! तुम धन्य – धन्य हो! तुम्हारे इतने हजारों शिष्य सेवक होते हुए भी तुम स्वयं भरी सभा में हमारे जूते अपने मस्तक पर रखकर लाये! तुमने हमारा दिल जीत लिया। ऐसे शिष्य धन्य – धन्य हैं। जिसके मन में गुरु के प्रति इतनी निष्ठा व समर्पण भाव हो। ऐसे शिष्य स्वयं का नाम तो उज्ज्वल करते ही हैं, साथ ही गुरु की यश – कीर्ति को भी बढ़ाते हैं।

चरण पादुका चाहते - स्वामी आसूराम ।
सत्संग से उठ शीश पर - लाये टेऊँराम ॥

दादा गुरुदेव श्री साईं आसूराम जी महाराज ने स्वामी जी का ऐसा स्नेहात्मक सेवा भाव देखा तो सहज ही हृदय से आशीर्वाद निकला 'टेऊराम तुम धन-धन हो - तुम्हारे माता - पिता भी धन - धन हैं, जो ऐसे सुसंस्कारी बालक को जन्म दिया - तुम्हारी सदैव जय - जयकार होगी - यश- कीर्ति बढ़ेगी। टेऊराम.... तुम्हारा नाम सदैव अजर अमर रहेगा - सारा जहान तुम्हारे सामने नत मस्तक होगा।' गुरुदेव दादा जी का आशीर्वाद फलीभूत हुआ।

गुरुदेव सांईं आसूराम जी महाराज के आशीर्वाद से सतगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की यश – कीर्ति चहुँ ओर दिनों दिन बढ़ती रही है..... आज सारे जहान में स्वामी जी की जय – जयकार है। ये सब ‘गुरु – सेवा’ का फल है। ऐसे सेवा अवतारी श्री गुरुदेव जी को हमारा शत – शत नमन! धन-धन सद्गुरु टेऊराम जी महाराज!

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

अनन्य बाल प्रेमा-भक्ति

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙ਼ਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-੧੧

भगवान की अनन्य कृपा

(मुहर्म्म मुसलमान बना स्वामी जी का भक्त)

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज जब 'श्री अमरापुर दरबार' 'डिब' पर कण्डी वृक्ष के नीचे बैठकर भजन - साधना किया करते थे। उस समय वहाँ कुछ भी खाने-पीने की व्यवस्था नहीं रहती थी। केवल जंगली पेड़ - पौधे। अब देखो लीला पुरुषोत्तम महापुरुषों की अद्भुत लीला!

एक समय सभी संत-महात्मा एवं वैराग्यमूर्ति सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज भजन – कीर्तन कर रहे थे। तभी वहाँ एक “मुहर्रम” नाम का मुसलमान आया। वह बड़े ही ध्यान पूर्वक सत्संग श्रवण और स्वामी जी का दीदार – दर्शन करने लगा। दर्शन करने मात्र से उसके हृदय में गुरु महाराज जी के प्रति अथाह श्रद्धा भाव व प्रेम जाग्रत हो गया। बार – बार एकटक नज़र से गुरुदेव को निहार रहा था... मानो उसे कोई ख़ुश मिल गया हो.... प्रेमाश्रु बहाकर गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में आकर कहने लगा- ‘हे फकीर साईं। आज मुझे आपमें साक्षात् ख़ुश – अल्लाह के दर्शन हो रहे हैं – आप साधारण मनुष्य नहीं हैं.... आप तो ईश्वरीय अवतार हैं... मैं आपका दर्शन – दीदार कर धन्य – धन्य हो गया। हे फकीर साईं! हमारे खेत और घर इस जंगल के पास में ही हैं- कोई भी सेवा इस दास के लिए हो तो यह दास हर समय हाज़िर है।’ बस फिर क्या था- महापुरुषों की आशीर्वाद उसके ऊपर हो गई और वह प्रतिदिन संत-महात्माओं के लिये आटा, दूध और राशन सामग्री सेवा में लाने लगा।

जिसको भगवान पर पूर्ण विश्वास होता है— भगवान उसके निमित्त मात्र बनकर सब कार्य कर देते हैं। इसी के साथ – साथ जिसके ऊपर स्वामी जी की कृपा दृष्टि हो जाती थी, उसका जीवन भी धन्य – धन्य हो जाता था। महापुरुष अपनी कृपा कब किस के ऊपर कर दें... ये कोई नहीं जानता... पर जिसके ऊपर कर दें.... उनका लोक परलोक सँवर जाता है। समय – समय पर ऐसी अनेक लीलाएँ रचकर परमात्मा की सत्ता का भान करवाते हैं— संत—महापुरुष! गुरु महाराज जी के आश्रम (दरबार) पर हर समय सत्संग भजन भोजन की सेवा चलती रहती थी।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-13

बाबा जी का अखण्ड भण्डारा प्रसाद

अँजली में जल लेकर तुमने - भोजन पर जो मारा ।
तेरी दया से खत्म न होता - था भरपूर भण्डारा ।
जितना बाँटा बढ़ता जाये - तेरे खेल समझ न आये ।
तेरी महिमा है अनन्त अभिराम - कि लीला तेरी तू ही जाने...

एक समय खण्डू गाँव में सायंकाल विशाल सत्संग सभा का आयोजन हुआ। सत्संग में अनुमान से अधिक श्रद्धालु – भक्तगण आये। सभी सत्संग – भजन में हो गये मंत्रमुग्ध... गुरु महाराज जी का भजन – सत्संग वैराग्य भरा था। महापुरुषों की अलौकिक मस्ती!

सत्संग समाप्ति के पश्चात् युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने सभी से कह दिया- सभी भक्तजन भोजन - प्रसादी यहीं खाकर जाना - कोई भी बिना भोजन प्रसाद के न जाये। इतना सुनकर माता कृष्णादेवी ने स्वामी जी को बुलाकर कहा- अब! यहाँ तो 30-40 लोगों का ही भोजन बनाया है परन्तु यहाँ तो चार पाँच सौ से अधिक लोग बैठे हैं - अब क्या किया जाय...? घर में अनाज का एक भी दाना नहीं है ! अब- साईं बेटा! जैसा आप कहो- वैसा करें।

विश्व व्यापक, विश्वम्भर प्रभु परमात्मा के अस्तित्व का परिचय देकर माताश्री को स्वामी जी ने साँत्वना दी और दृढ़विश्वास से कहा – ‘जो परमात्मा सबका भरण – पोषण करता है, वह ही अपने आप सबको भोजन – प्रसादी अवश्य ही खिलायेगा।’

इतना कहकर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने जलपात्र लेकर 'सत्नाम साक्षी'.... 'सत्नाम साक्षी'... उच्चारण कर अँजलि भरके जल का छीटा भण्डारे पर छिड़ककर ऊपर से चादर ढक दी....

भक्त मंघनराम व सेवाधारियों को कह दिया कि आप चादर मत हटाना.... और जितना चाहिये, अन्नपूर्णा माँ का भोजन परोसकर 'सत्नाम साक्षी' कहकर.... खिलाते जाना... प्रभु – परमात्मा सब भली करेंगे... महापुरुषों के द्वारा कहा वचन सार्थक हुआ। ऐसा अदभुत दृश्य देखकर सभी आश्चर्य चकित हो गये। कहाँ तो 30-40 लोगों का भोजन और कैसे 400-500 लोग भोजन करके गए... भगवत् कृपा से सभी ने भरपेट भोजन – प्रसाद खाया... यहाँ तक कि दीन – अनाथ, गरीबों को भी भरपेट भोजन खिलाया गया। कौन समझे ऐसे महापुरुषों की लीला को! कहते हैं कि तभी से सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी बाबा का अख़्त भण्डारा प्रसिद्ध है।...

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-14

भाव के भूखे होते हैं – संत और भगवान

एक बार शाहभिद्व नामक कस्बे में, जहाँ कुछ दिनों से युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज मण्डली सहित संगत को भगवन्नाम का अमृत पिला रहे थे। वहाँ के भक्त रूपचन्द बड़े संत सेवी थे। संतों की खूब सेवा किया करते थे और संतों से बड़ा प्रेम था।

उस दिन किसी कारणवश गुरु महाराज जी के सत्संग में नहीं आ सके, किन्तु अनेक प्रेमी – भक्तों की मन में था कि स्वामी जी स्वयं उनके घर पर चले... स्वामी जी तो अंतर्धामी थे... सभी के मन की बात जान गए और कहा – ‘चलो... अभी रूपचन्द के घर चलते हैं।’ यह सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ, हम तो सोच ही रहे थे... और फिर मण्डली को साथ लेकर गुरु महाराज जी पहुँचे भक्त रूपचन्द के घर..... इक ही प्रेम प्रभु को भाया...

भाई रूपचन्द- वह तो गुरु महाराज जी के दर्शन करके बड़ा गदगद हुआ - बहुत पसन्न हुआ। अपना अहोभाग्य मानते हुए कहने लगा कि आज तो मैं धन्य - धन्य हो गया... मेरा घर पवित्र हो गया। घर बैठे ऐसे वैरागी - तत्त्ववेत्ता संतों के दर्शन प्राप्त हुए हैं। मैं तो अनेकानेक जन्म - जन्मांतर के पापों से मुक्त हो गया... जय हो प्रभु - तेरी जय हो...

इतना ही नहीं स्वामी जी ने ‘भक्त रूपचन्द’ से कहा— सुना है — आप अपने हाथों की चक्की का आटा पीसते हो और उसी आटे की रोटियाँ बनाकर साधु — संतों व भक्तों को खिलाकर सेवा करते हो। अतः हमें भी रोटी खिलाओ — हमें भी बड़ी भूख लगी है। इतना सुनकर भक्त और भी अत्यधिक प्रसन्न हो गया... खुशी का ठिकाना न रहा। ‘सबसे ऊँची प्रेम सगाई’ भक्त रूपचन्द गुरु महाराज जी की ऐसी आज्ञा सुनकर तो निहाल हो गया। उस समय उसके घर में जैसी भी रोटी और साग (सब्जी) उपलब्ध था, वह स्वामी जी के सामने बड़े प्रेमभाव से परोस दिया और बेसुध होकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। स्वामी जी ने भी यह प्रसाद वैसे ही पाया जैसे भगवान श्री कृष्ण ने विदुर के घर जाकर केले के छिलके.... सुदामा के तन्दुल..... खाकर उसे कृतार्थ किया था.... आज वहीं भक्त और भगवान का दिव्य दर्शन सभी को हो रहा था... ऐसी अलौकिक दिव्य लीला — दर्शन देखकर सभी भक्त बहुत प्रसन्न हुए। इसे कहते हैं — ‘भक्त और भगवान का अनन्य प्रेम !’

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੌਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-15

गुरु कृपा से कुँए का खारा जल हुआ मीठा

एक समय सिन्ध प्रदेश में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज मण्डली सहित बडाणी के पास बरखापुर कस्बे में पहुँचे। जहाँ लगी सत्संग की बसंत- बहार... गुरु महाराज जी की ओजस्वी वाणी..... जो सभी के दिल को छू जाती थी। साधारण जन तो क्या मूक प्राणी पशु - पक्षी भी सुनने के लिये हो जाते थे आतुर! साथ ही थे स्वामी जी ऋद्धि- सिद्धियों के मालिक!

महाराज श्री का नाम सुनकर दूसरे दिन शहर के पंच – सरपंच सभी मिलकर प्रातःकाल स्वामी जी के पास आये। स्वामी जी उस समय ध्यानस्थ थे। कुछ समय पश्चात् पंचों ने स्वामी जी से प्रार्थना की— ‘हे प्रभु! दीनानाथ! हमारे गाँव में पीने के पानी की बहुत तकलीफ है। पानी भी बहुत कम है और एकमात्र कुँए का पानी..... वो भी खारा है। पानी न होने के कारण पूरा बरखापुर कस्बा बड़ा परेशान रहता है। खारे पानी पीने से बीमारियाँ भी बहुत हो जाती हैं। पीने योग्य पानी भी प्राप्त नहीं हो रहा है। कृपा करें – प्रभु! आप तो जग के पालनहार है। आपकी कृपा हो जायेगी तो जल मीठा व पीने योग्य हो जायेगा और जल की कमी भी नहीं रहेगी।’

त्रिलोकीनाथ सद्गुरु स्वामी टेऊराम महाराज जी उस समय भजनानंद की मौज में थे। स्वामी जी ने कहा- ‘आप कल प्रातःकाल मीठे चावलों की देग तैयार करके गरीबों – अनाथों-कन्याओं में बाँटना... प्रभु – परमात्मा अवश्य कृपा करेंगे।’ तपस्वी महापुरुषों के श्रीमुख से निकला वचन कभी निरर्थक नहीं हो सकता।

गुरु महाराज जी के वचनानुसार पंचों ने दूसरे दिन मीठे चावलों की देग बनाकर गरीब – अनाथों – कन्याओं में बाँटी और गाँव के सारे घरों में मिष्ठान का प्रसाद भी बाँटा गया।

तब श्री समर्थ सदगुरु टेऊराम जी महाराज पंचों के साथ कुँए पर गये, वहाँ अपनी चिपी (कमण्डल) से अभिमंत्रित कर जल का छीटा... सतनाम साक्षी-2... कह कर कुँए में डाल दिया। फिर क्या था- देखते ही देखते कुँआ जल से लबालब भर गया! जल निकालकर पीया तो क्या देखते हैं... जल एकदम साफ - मीठा - स्वच्छ और पीने योग्य हो गया था। यह लीला देखकर सभी भक्त बड़े आश्चर्य चकित हो गए! फिर सभी लोग प्रसन्नचित हुए.... धन्य हो प्रभु- आपकी लीला अपरम्पार है.... इसे समझ पाना बड़ा मुश्किल है।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-16

महापुरुषों की अवधूती मस्ती

(सूरश्याम भक्त केवलराम को माँगना ही नहीं आया....)

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज वृक्ष की छाँव तले भजनानंद की मस्ती में श्री अमरापुर स्थान पर बैठे थे। अवधूती मस्ती का अनोखा आलम ! मुखमंडल पर दिव्य आभा – भक्ति तपस्या का तेज पुँज ! कौन समझे उन संत – फकीर – मुर्शिदों की रमझ को – भजनानंद की अलौकिक मौज ! उसी समय आया एक गवैया सूरश्याम केवलराम भक्त। भक्त के पास थी संगीत की अद्भुत कला, गाने-बजाने में था वह निपुण... उसने गुरु महाराज जी के सामने बहुत ही मधुर – मधुर भजन गाए ! भक्ति-भाव के भजन सुनकर सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज उस पर हुए बहुत प्रसन्न... उस समय स्वामी जी ने हृदय से प्रसन्न होकर गवैया केवलराम से कहा- ‘भगत जी ! आज हम तुम्हारे भजन – भाव से बहुत प्रसन्न हुए हैं- माँग लो – आज जो कुछ भी माँगोगे वह तुम्हें अवश्य ही मिलेगा।’ परन्तु कहते हैं न, जिसके भाग्य में कुछ भी न हो या फिर जिसे संत महापुरुषों से माँगना नहीं आता हो, तो वह भाग्यहीन ही रह जाता है- उन्हें उस समय माँगना भी नहीं आता ! क्या माँगे ? उन भोले – भाले भक्तों को क्या मालूम कि उस समय तपस्वी महापुरुषों की स्थिति कैसी न अद्भुत होती है – उस क्षण जो भी माँगा जाये वह अवश्य ही मिल जाता है – परमात्मा भी उस वचन को टाल नहीं सकते ! फिर समय निकल जाने पर कछ भी हाथ नहीं आता....

बस! फिर क्या था उस समय भोले – भाले ‘सूरश्याम भक्त केवलराम’ को स्वामी जी से माँगना भी नहीं आया और उनसे एक तुच्छ वस्तु गर्म कोट माँग लिया... अगर थोड़ा सोच – समझ या विचार करके युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज से नेत्र ज्योति (आँखों की रोशनी) माँग लेता तो वह भी उसे अवश्य मिल जाती और उसका जीवन सँवर जाता... उन नेत्रों से भगवान व श्री गुरुदेव के दर्शन भी करता... पर उस कृपादृष्टि का लाभ हर कोई नहीं ले पाता। महापुरुषों की उस समय की स्थिति बड़ी अदभुत एवं विलक्षण होती है।

थोड़ी देर के बाद वैराग्यमयी नजरों से निहारकर सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने कहा- ‘अरे भाई केवलराम! तुमने ये क्या तुच्छ वस्तु माँग ली, अरे! आज तुम्हें माँगना भी नहीं आया। आज अगर तुम नेत्र (आँखों की ज्योति) भी माँगते तो वह भी तुम्हें अवश्य प्राप्त हो जाती... किन्तु अब वह बन्दगी वाली स्थिति, समय, घड़ी हाथ से निकल गई – अर्थात् बड़ा सुन्दर अवसर गँवा दिया।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੌਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-17

**कौन लेकर आया बस – कौन था चलाने वाला
उसकी लीला वो ही जाने.....**

एक समय युगपुरुष सद्गुरु श्री स्वामी टेऊराम जी महाराज संत मण्डली के साथ यात्रा करके किसी गाँव में पहुँचे। वहाँ दिन भर सत्संग – भजन की मौज हुई। सायंकाल दूसरे स्थान पर, जहाँ पर पहले ही सत्संग का भव्य कार्यक्रम रखा हुआ था। किन्तु जहाँ सत्संग का कार्यक्रम किया गया था, वहाँ सत्संग की मौज बहार व भक्तों की प्रेमा भक्ति के कारण बहुत देरी हो गई। उस छोटे से गाँव में वाहन बसें भी समय पर ही चलती थीं। समय पर जाने वाली बस के बाद कोई बस अथवा दूसरा कोई साधन भी नहीं होता था। वहाँ देर हो जाने के कारण सायं 3 बजे जाने वाली अंतिम बस जा चुकी थी। अब कोई दूसरा साधन भी नहीं था। सभी संत व भक्तजन बस स्टेण्ड पर खड़े रहे। उस समय सद्गुरु महाराज जी की मण्डली में 40-50 संत – भक्त चल रहे थे। सभी परेशान होने लगे – अब क्या क्या किया जाये? कैसे पहुँचेंगे दूसरे गाँव? दूसरा कोई साधन भी नहीं था और समय भी तीव्र गति से भागा जा रहा था। इसी बीच महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की तो अपनी फकीरी वाली मौज, न कोई चिंता न कोई परवाह – अपनी अवधूती मस्ती में मस्त! सभी ने की – गुरु महाराज जी से प्रार्थना...

हे – दीनदयाल – अन्तर्यामी प्रभु! अब आप ही कृपा करो, जिससे समय से पहुँचकर सत्संग आयोजन को पूर्ण कर सकें। सद्गुरु महाराज जी ने कहा– ‘आप चिंता मत करो । सब बैठकर भगवान का भजन– कीर्तन करो। सतनाम साक्षी-2... धुनि लगाओ।’

स्वामी जी की आज्ञा अनुसार सभी संत और भक्तजन बड़े ही भावविभोर होकर 'सतनाम साक्षी सर्व आधार - जो सुमरे सो उतरे पार' धुनि - संकीर्तन करने लगे। बस फिर क्या था। लीला पुरुषोत्तम ने दिखाई अपनी रहस्यमयी लीला! थोड़ी ही देर में एक बस आकर खड़ी हो गई। यह देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गये। गाँव से अंतिम बस 3 बजे चली गई थी। उसके बाद दूसरी कोई बस जाती ही नहीं थी। यह बस कहाँ से आ गई। गाँव वाले भी बड़े हैरान! ऐसा पहले कभी भी नहीं हुआ। कौन लेकर आया यह बस? कौन था चलाने वाला? कुछ अता - पता नहीं। उसकी लीला वे ही जानें। उस फकीर सद्गुरु टेऊराम बाबा की लीला को कौन समझे। सभी प्रसन्नचित होकर कहने लगे- हे गुरुदेव! आपको समझ पाना बड़ा मुश्किल है - प्रभु आप धन्य हैं! ऐसी अदभुत ऋद्धि - सिद्धियों के मालिक थे - सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज! आज तक कोई भी नहीं समझ पाया उनकी इस अदभुत रहस्यमयी लीला को....

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

आडम्बर से दूर एवं निर्मलता

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

नन्हें बालक का अटल विश्वास

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

ਸਦਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੋਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-23

हरीराम भण्डारी पर श्री गुरुदेव की असीम कृपा

टण्डा आदम श्री अमरापुर दरबार पर 'हरीराम' नाम का एक भंडारी संतो की खूब सेवा किया करता था। उसका स्वभाव भी बड़ा अच्छा व मृदुल था। सदैव प्रसन्न मन से भोजन बनाने की सेवा करता था। पवित्र मन से भण्डारा बनाने से भोजन – प्रसाद भी बहुत अच्छा और स्वादिष्ट बनता था... सारे संत – महात्मा और गुरु महाराज जी भी उनकी सेवा से प्रसन्नचित रहते थे। उसकी निष्कामता, निर्मलता, पवित्रता और मृदुलता ने उसे सभी संत – सेवाधारियों व श्री गुरु महाराज जी का प्रिय बना दिया था।

एक समय हरीराम भंडारी हाथ जोड़कर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज से कहता है- ‘हे प्रभु! दीनदयालु! आप कृपा करके इस दास को सदैव अपनी सेवा में ही रखना..... अपने से कभी भी अलग मत करना..... हमेशा अपने साथ व अपने पास रखना..... मैं सदैव आपके श्री चरणों की सेवा करना चाहता हूँ।’

श्री सतगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज उस समय भजनानन्द की मौज में बैठे थे। अवधूती मस्ती! स्वामी जी ने कहा – ‘भाई! आप किसी बात की भी चिंता मत करो – घबराने की कोई आवश्यकता नहीं। आपने हमारी दिल बहुत खुश की है, हम तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हैं..... यह लोक तो क्या परलोक में भी तुम्हें अपने साथ ही रखेंगे.... तुम चिंता मत करो।’ श्री गुरुदेव के वचन सुनकर ‘हरिराम भंडारी’ बड़ा प्रसन्न हुआ... इसे कहते हैं – ‘श्री गुरुदेव की अनन्य कृपा’! ऐसा हर कोई नहीं कह सकता... जो पूर्ण ब्रह्मज्ञानी होगा... वह ही दावे के साथ कर सकता है कि हम तुम्हें परलोक में अपने साथ रखेंगे।

संत – महापुरुष जिसके ऊपर कृपा कर दें, तो उसका जीवन ही सँवर जाता है। बस! हम उन महापुरुषों को समझने का प्रयास करें। ऐसे कामिल महापुरुष इस लोक में तो क्या, परलोक में भी सहायक और हमराही बनते हैं। वही हमें इस संसार सागर से पार कर सकते हैं। ये सब होता है – निष्काम सेवा का फल....! हम भी श्री गुरु दरबार व संतों की खूब तन मन से निष्काम सेवा करें तो हमारा लोक-परलोक दोनों सँवर जायेंगे।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

संत परम हितकारी

S. M. R.

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-25

तपोबल के प्रभाव से बनाया – रेत के टीले पर कुँआ

संत-महापुरुषों का संकल्प बड़ा ही अद्भुत होता है, एक बार जो मन में संकल्प आ जाये तो उसे वह अवश्य ही पूरा करते हैं। फिर चाहे उस कार्य में कितनी ही कठिनाईयाँ क्यों न हों; क्योंकि उन्हें होता है भगवान पर पूर्ण विश्वास.... विश्वास की ही जय होती है। श्री अमरापुर दरबार डिब्ब जो रेत के टीले पर बनी, यह कार्य कोई साधारण कार्य नहीं था, जो कि रेत के टीले पर इतनी बड़ी दरबार बन जाये और तो और वहाँ कुँआ खोदना और फिर उसमें से जलधारा निकालना, ये तो और असंभव.... यह सब कार्य तो सिद्ध महापुरुषों द्वारा ही सम्भव हो सकता है... यह सब कार्य तो साधना व तपोबल के प्रभाव से ही सम्भव हो सकता है अन्यथा हम कितनी ही मशीनीकृत उपकरणों का प्रयोग कर लें फिर भी रेत के टीले पर कुँआ बनाना व उसमें से जल निकालना, अत्यंत दुष्कर कार्य.... कोई नहीं समझ पाता उन संत फकीरों की रहस्यमयी लीलाओं को... अवधूती मस्ती, फकीरी का अनोखा आलम, मुख मण्डल पर शोभित अद्भुत तेज... अपनी साधना में रत...

ऐसे ही एक समय **युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज** साधु-संतों को लेकर आये **श्री अमरापुर दरबार डिब पर**, अपनी लाठी से लकीरें खींचकर कहने लगे.... यहाँ पर कुआँ खोदिए, यह वह समय था जब संत-सेवाधारियों को दूर-दूर से जल लाने के लिए बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता था। स्वामी जी ने कह दिया कि **आज से दरबार साहब पर भण्डारा प्रसाद दोनों समय चलेगा....** आज्ञा पाकर सभी साधु-संत-सेवाधारी कुँआ खोदने लगे। एक भगत ने कुँए के लिए चक्का भी बनाकर तैयार कर दिया। सद्गुरु महाराज जी स्वयं लाठी लेकर कुँए की खुदाई के काम का निरीक्षण कर रहे थे, उस समय कुछ ऐसी घटना घटित हुई.... जिस समय कुँए में जलधारा निकली, तब उसमें चक्का डाला गया.... चक्का डालते समय एक और का रस्सा टूट गया.... सभी संत-सेवाधारी लोग चिन्ता में पड़ गये। उस समय ऐसी कोई यांत्रिक मशीनें भी नहीं हुआ करती थीं, जिससे वह चक्का बिना किसी बाधा के सीध में लगाया जा सके। सभी चिन्तित होकर सोचने लगे... हमारी मेहनत व्यर्थ जायेगी और पानी भी नहीं मिलेगा... किन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। जिसके साथ स्वयं समर्थवान् ईश्वर स्वरूप श्री गुरुदेव भगवान् हों फिर भला कैसी चिन्ता....

स्वामी जी ने सभी साधुओं सेवाधारियों से कहा- आप चिन्ता मत करो, आप तो चक्का डाल दो (आज भी अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में चक्के द्वारा बेल की सहायता से कुओं से पानी खींचा जाता है)। श्री गुरुदेव के तो कहने की देरी थी, जैसे ही चक्का कुँए में डाला तो वह एकदम सीधा समतल गिरा, मानो उसे किसी सधे हुए कारीगर द्वारा यत्नपूर्वक रखा जा रहा हो.... कौन रख रहा था उस चक्के को सीधा करके... ये तो वे सिद्ध महापुरुष ही जानें.... किस रूप में कौन सी लीला करते हैं ये महापुरुष, आज तक कोई नहीं समझ सका....

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

‘ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ’

सद्गुरु स्वामी टेऊराम गुण गाथा-26

तप-साधना-भक्ति के प्रभाव से बना तीर्थ श्री अमरापुर स्थान

(उड़ती रेत को दिया आपने थाम.....)

जिस बालू रेत से शहर वालों को बड़ा खतरा रहता था। आये दिन आंधी - तूफान से पूरा शहर मिट्टी - मिट्टी हो जाता था। जगह - जगह रेत के टीले बन जाते थे... सभी को बड़ा नुकसान होता था। बड़े से बड़े सरकारी कर्मचारी अधिकारी भी इसका निराकरण नहीं कर पा रहे थे। सभी ने बहुत प्रयास किये... परन्तु सब व्यर्थ... किन्तु तप - तपस्या - साधना - भक्ति के बल पर महायोगी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने संत - महात्माओं के साथ मिलकर उस बालू रेत को इस प्रकार बंद कर दिया कि उसका एक तोला भर भी उड़कर शहर में नहीं आ सकता था... शहर वालों पर बहुत बड़ा उपकार हो गया। वैसे भी साधु - संत - महात्मा तो परउपकारी होते ही हैं - जगत् कल्याण के लिए ही अवतरित होते हैं। साधु - संतों ने तो बहुत कड़ा परिश्रम कर जंगल में मंगल कर दिया... जो कार्य असम्भव था... वह भजन - साधना के प्रभाव से युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने सम्भव कर दिया।

इस आश्चर्यजनक शक्ति को देखकर श्री गुरु महाराज जी के समक्ष जिलाधीश सहित बड़े - बड़े अधिकारी, मजिस्ट्रेट, पटवारी, सरपंच व पूरे शहर की जनता नत् मस्तक हो गये। सभी महाराज श्री के उपकार का यशोगान करने लगे।

ऐसा अद्भुत करिश्मा तो ईश्वरीय शक्ति ही कर सकती है... समतल जमीन से लगभग 30-35 फुट ऊपर श्री गुरुदेव जी की तप - साधना स्थली - वही रेत का टीला - ‘श्री अमरापुर दरबार (डिब)’ के नाम से सुविख्यात हुआ... आज भी वह पवित्र तीर्थ स्थल टण्डाआदम (सिन्ध) में बना हुआ है। हजारों भक्त प्रतिदिन दर्शन करते हैं। सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ‘डिब वाले साई’ के नाम से प्रसिद्ध हुए... तभी किसी कवि ने एक पंक्ति में लिखा-- ‘उड़तीरेत को दिया आपने थाम - कि लीला तेरी तू ही जाने’... ऐसे युगपुरुष तपस्वी महापुरुषों को शत - शत नमन...

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

पटवारी वाहिद बरूश बना स्वामी जी का शिष्य

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੌਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-29

रिग्ये भगत के चोरी की आदत को छुड़वाना

बात उस समय की है – जब युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज खण्डू में विराजमान थे। उस समय श्री गुरु महाराज जी की सेवा में हंसराज और खिया भगत रहते थे। खण्डू के बाद ये दोनों श्री अमरापुर दरबार डिब् – टण्डेआदम में भी सेवारत रहे... किन्तु कुछ संस्कारवश खिये भगत में चोरी की बुरी आदत पड़ गई थी। वह संत – महात्माओं के कपड़े चोरी करके अपने घर भेज देता था। उसके परिवार वाले मना भी करते थे पर वह मानता ही नहीं था। इस बुरी आदत के कारण सभी संत खियाराम से रुष्ट रहते थे। प्रतिदिन चोरी होने लगी – इससे संत नाराज होकर स्वामी जी के पास शिकायत लेकर आये। ये खिया रोज हमारे कपड़े चुराकर घर भेज देता है। अतः आप इसे यहाँ से निकाल दें। हम इससे बहुत परेशान हो गए हैं। स्वामी जी ने संतों की शिकायत व नाराजगी को शान्तचित होकर सुना लेकिन बोले कुछ नहीं!

एक समय खियाराम की बेटी चोरी के सारे कपड़ों की गठरी बाँधकर स्वामी जी के पास ले आयी। यह देखकर संतों ने नाराजगी जताते हुए स्वामी जी से कहा, कि देखा आपने! ये सभी चोरी के कपड़े हमारे हैं। अब आप इसे आश्रम से निकाल दें.... इसने बहुत चोरी की है..... ये यहाँ रहने के लायक नहीं है.....

करुणा की साक्षात् मूर्ति भक्तवत्सल सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज संतों को शान्त करते हुए बोले- ‘अरे भाई! यह जैसा भी है- हमारा है। आप नाराज न हों, सब ठीक हो जायेगा। जब डॉक्टर के पास मरीज जाता है, तो बीमारी से छूटने के लिए जाता है। यदि डॉक्टर उस मरीज को ठीक नहीं कर पाता तो उसमें डॉक्टर की कमजोरी है। यह हमारे पास इतने समय से सेवा कर रहा है। किसी कारण वश इसे यह बीमारी लग गई है, तो कोई बात नहीं। इसने आश्रम की तन - मन से खूब सेवा की है... अब इसे यहाँ से निकाल दें? यह हमसे नहीं हो पायेगा! संत - महात्मा तो दयालु होते हैं। इसे अगर बीमारी ने घेरा है तो हम इसे ज्ञान रूपी औषधि देकर इसके विकार को भी अवश्य दूर कर देंगे।’

तपस्वी सिद्ध महापुरुषों के आशीर्वाद से तो बुरे से बुरी कर्म रेखा भी मिट जाती है। अज्ञानी ज्ञानी बन जाता है। पापी पुण्यात्मा बन जाता है। दुर्जन सज्जन बन जाता है। ये होती है – सदगुरु देव भगवान की अनन्य कृपा! जिनके ऊपर कृपा कर दें – उसका जीवन सँवर जाता है। बस– फिर क्या था। स्वामी ने भक्त खियाराम के ऊपर कृपा दृष्टि कर दी – आशीर्वाद देते हुए जीवन को सात्विक बनाने के लिए सुंदर– सुंदर ज्ञानोपदेश दिया। श्री गुरु महाराज जी के मधुर वचनामृत पान कर उसका हृदय परिवर्तन हो गया। उसी क्षण भक्त खियाराम लज्जित होकर सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के श्रीचरणों में गिर पड़ा, ‘हे प्रभु! हे कृपानिधान! आप मुझ पर दया करो... कृपा करो, मुझसे बड़ी भूल हो गयी है... मुझे क्षमा कर दें.... आज के बाद मैं कभी भी चोरी नहीं करूँगा।’ उस दिन के बाद उसने कभी भी चोरी नहीं की। श्री गुरु महाराज जी की कृपा से उसका जीवन सँवर गया।

ऐसे क्षमाशील महापुरुषों को कोटि कोटि वन्दन! धन-धन सद्गुरु टेऊराम जी महाराज!

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੌਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-30

ભગવત્ પ્રેમ રુપી જોલ

भगवत् प्रेम को समझना बड़ा कठिन है। प्रेम के वशीभूत होकर परमात्मा भी खिंचे चले आते हैं। प्रेम की भाषा अलौकिक है – उसे समझना – जानना सरल काम नहीं... बहुत ही कठिन काम है। सर्वस्व समर्पित हो जाना ही प्रेम है। प्रभु परमात्मा के प्रेम में तो अनेक कष्ट, दुःख – दर्द सहन करने पड़ते हैं। सोने को जितना तपाओ, उतनी चमक अधिक होती है... इसी प्रकार प्रेम में भी सब कुछ सहन करना पड़ता है। त्याग – तपस्या, भक्ति से भरपूर जब किसी संत महापुरुष की यश – कीर्ति बढ़ती है, तो कुछ प्रतिद्वंद्वी लोग ईर्ष्यावश नीचा दिखाने का प्रयास करते हैं। कोई न कोई उपद्रव खड़ा करते हैं। जिससे संत महात्माओं की निन्दा हो.... उनको नीचा देखना पड़े... पर परमात्मा ऐसा नहीं होने देते.... आगे चलकर उनकी यश – कीर्ति को और अधिक बढ़ा देते हैं।

ऐसा अनादि काल से चला आ रहा है पर जिसे भगवान पर पूर्ण विश्वास व भरोसा होता है, उसका कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता... चाहे वो कितने भी यत्न कर ले। वैसे भी संत महात्माओं, भक्त – कवियों को जीवन में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा है..... ये सब भी भगवान की परीक्षा व लीलाएँ होती हैं.....

सिन्धु प्रदेश के भगवद् स्वरूप महायोगी तपस्वी सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज भी भगवत् भक्ति व सत्य सनातन धर्म का प्रचार – प्रसार कर रहे थे। उनकी यश और कीर्ति चहुँ ओर फैल रही थी। सनातनधर्मी व ज्ञान – ध्यान का सँचार जन – जन के हृदय को प्रभावित कर रहा था। पाप कर्म को छोड़कर अनेक भक्तजन शुभकर्म कर रहे थे। जहाँ पशुबलि जैसे हिंसक कर्म होते थे। वे सब अशुभ कर्म छोड़कर सात्विक कर्म करने लग गये थे। सभी के हृदय में ज्ञान – ध्यान भक्ति सँचारित होने लगी थी। ऐसा ही था सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की भक्ति – शक्ति का प्रताप... किन्तु स्वामी जी की कीर्ति – प्रतिद्वन्द्वी लोगों से देखी न गयी और तब उन्होंने अपयश हेतु समाचार पत्र में छपवा दिया कि स्वामी टेऊराम जी महाराज व संत मण्डली को जेल में बंद कर दिया गया है.....

दूसरे दिन किसी भक्त ने स्वामी जी को समाचार पत्र दिखाकर कहा – ‘भगवन्! देखो! ये क्या छाप दिया है – स्वामी जी व संत मण्डली को जेल में बंद कर दिया है। महापुरुष तो गुणग्राही होते हैं। सभी में से सार तत्व ही ग्रहण करते हैं। तब स्वामी जी ने बड़े ही मार्मिक भाव से कहा– ‘हाँ भाई! इन्होंने तो बिल्कुल सही ही लिखा है – हम सच में ही भगवान के प्रेमरूपी जेल में बन्द हो गये हैं.... हम इस जेल से निकलना भी नहीं चाहते.... भगवान हमें सदैव अपने ‘हृदय रूपी प्रेम के जेल’ में ऐसे ही बाँधे रखे.... हम तो वहीं रहना चाहते हैं....’ देखो – सत् महापुरुषों की सहनशीलता! कुछ भी ना कह कर उसमे से भी गुण ही ग्रहण किया। तब श्री गुरुदेव जी ने बड़ा ही सुन्दर भजन गाकर सुनाया-- ‘प्रेम ने मूझको बाँध लिया है –विरह केरे बन्दखाने- मध मैखाने....’

प्रभु प्रेम में निन्दा और दुःख तो मिलते ही हैं। परन्तु जब वे सभी दुःखों को सहन कर प्रभु की परीक्षा में पास हो जाते हैं। उसके बाद उनका नाम और यश – कीर्ति संसार में और अधिक फैल जाती है। वे अंत में सुख को पाकर पूजनीय संत-महात्मा बन जाते हैं! ऐसे प्रभु प्रेम में दुःख व निन्दा को भी गले लगाने वाले सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के श्रीचरणों में कोटि कोटि वन्दन!

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਕੌਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-32

जमकर बरसे बदरा.....

संत - महापुरुष इस कलिकाल में भी समय समय पर अनेकों अद्भुत लीलाएँ करके प्रभु सत्ता का भान करवाते रहते हैं। ऐसे ही अवतार कोटि के लीला पुरुषोत्तम थे - युगपुरुष मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज! जिन्होंने अपने भक्तिमय जीवन में अनेक लीलाएँ रचीं.....

एक समय टण्डा आदम में रहने वाला हीरालाल नामक स्वामी जी का एक भक्त था। जो सदैव संतों व श्री गुरु आश्रम की तन – मन से खूब सेवा करता था। उसके मन में एक इच्छा थी कि एक बार सतगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज मेरे घर पर चरण पखारें.... वह भक्त सदैव स्वामी जी से यहीं प्रार्थना करता रहता था.... श्री गुरु महाराज जी ने कहा – समय निकाल कर एक बार तुम्हारे घर पर अवश्य ही आएँगे।

ऐसे ही एक समय श्री गुरु महाराज जी भक्तिरस की मस्ती में मस्त बैठे थे। कौन जानता है सिद्ध महापुरुषों की अद्भुत लीला को...? तेज गर्मी का समय..... भगवान भास्कर की प्रचंडता..... तपती रेत..... गर्म हवाओं से सभी व्याकुल..... भरी दपहरी का समय.....

स्वामी जी ने संत मण्डली व भक्तों से कहा – चलो अभी हम सब भक्त हीरालाल के घर चलते हैं... सभी संत हैरान। इतनी तीक्ष्ण गर्मी। लू की भरमार – पर स्वामी जी की आज्ञा थी... योगियों की तरह रमण करने वालों के लिए क्या धूप, क्या छाँव। अवधती मस्ती का आलम!

स्वामी जी पूरी मण्डली सहित गाते-बजाते, भक्ति सरोवर में डूबे उस भक्त के घर की ओर चलते चले जा रहे थे। सभी पसीने से लथपथ - गर्मी - लू से बैचेन। तब सभी भक्तों व संतों ने स्वामी जी से विनम्र भाव से प्रार्थना की- 'हे प्रभु! गर्मी बहुत हो रही है, सूर्य देवता की तपत भी बहुत है। हम सभी बड़े व्याकुल हो रहे हैं। आप कृपा करो कि थोड़ा मौसम ठण्डा हो जाए। आप तो स्वयं परमात्मा के अंश हैं.....

स्वामी जी के भक्ति की तार परमात्म तत्त्व से एकाकार थी। भक्ति का अनोखा आलम, शरीर का भान नहीं, अलख निरंजन! उस आत्मानन्द के आनंद को कौन समझे।

स्वामी जी ने एकाएक तम्बूरे की तान को छोड़ते हुए – भक्ति भाव से सारंग राग का एक मधुर भजन गाया – ‘बादल करि आबादु- वसी हिन वेले...’ ‘कहे टेऊं ही अर्जु अघाइजि- दुकर कटे तूं सुकरु बणाइजि, करि मसीबत मादु ॥’

भजन में इतना रस और भक्ति भाव था... जो इन्द्र देवता भी अपने आप को रोक नहीं पाये... घनघोर घटा के साथ जमकर बदरा बरस पड़ी..... उस वक्त का दृश्य भी अलौकिक था.... जिसने प्रत्यक्ष देखा होगा, वह ही उसे जान सकता है। मौसम एकदम सुहावना हो गया.. बरखा रानी बरस रही थी... सभी भक्तों का तन – मन शीतल हो गया। स्वामी जी को इन्द्र देवता ने प्रणाम किया। ऐसी लीला देखकर सभी बड़े प्रसन्नचित हो गए।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-33

ਪਥਰ ਸੇ ਨਿਕਲ ਪੜੀ ਜਲਧਾਰਾ.....

संत – महात्मा सर्व शक्ति के मालिक होते हैं। जब चाहे जैसा चाहे लीला कर सकते हैं। ऐसे ही ईश्वरीय अवतार युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की अनेक लीलाएँ समय – समय पर संतों – महापुरुषों व भक्तों ने प्रत्यक्ष रूप से देखीं गयी है।

एक समय की बात है लीला पुरुषोत्तम सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज संत मण्डली व कुछ भक्तों के साथ जंगल की सैर करने निकल पड़े... गर्मी अधिक थी। श्री गुरु महाराज जी तो तेज कदम चलते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। सारे संत व भक्तजन पीछे रह गए... केवल संत उद्धवदास जी स्वामी जी के पीछे – पीछे चल रहे थे। स्वामी जी अपनी मौज में चलते चले जा रहे थे। परमात्मा की मस्ती में मस्त – भक्ति का अनोखा आलम! पता नहीं वो अलौकिक मस्ती महापुरुषों को कौन सी है! इसे पहचाना नहीं जा सकता.....

वे तो अल्लाह लोक के मालिक होते हैं। उनके लिये कुछ भी असंभव नहीं होता है। कब कौन सी लीला कर दें। उनकी लीला वे ही जानें... कुछ समय चलते – चलते स्वामी जी की दृष्टि पीछे की ओर गयी तो देखा – सभी संत – महापुरुष दूर रह गये थे। केवल संत उद्धवदास जी साथ थे।

तब संत उद्धवदास जी ने श्री गुरु महाराज जी से प्रार्थना की, 'हे भगवन्! मुझे बहुत प्यास लगी है... आसपास में कोई तालाब, नदी, कुँआ नज़र नहीं आ रहे हैं... अब आगे चला भी नहीं जा रहा। कृपा करें – प्रभु! बहुत प्यास लगी है.....' अब देखो! महापुरुष यहाँ कैसी लीला करते हैं! हमारी समझ से कोसों दूर....

स्वामी जी ने उद्धवदास जी से कहा - 'ये चट्टान के ऊपर रखा पत्थर हटाओ।' संत उद्धवदास जी समझ नहीं पा रहे थे कि इतना गहन जंगल - पानी का दूर - दूर तक कोई नामो निशान नहीं। परन्तु श्री गुरु महाराज जी कह रहे हैं इस पत्थर को उठाओ। पता नहीं, इसमें क्या रहस्य छुपा हुआ है? आज्ञा शिरोधार्य कर जैसे ही पत्थर को उठाया तो स्वतः ही वहाँ से 'जलधारा' निकल पड़ी..... संत उद्धवदास जी यह अद्भुत दृश्य देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ समझ नहीं पाये। उन्होंने पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई। फिर स्वामी जी ने उनको आज्ञा दी कि इस पत्थर को पुनः उठाकर यथा स्थान रख दो, जैसे पहले रखा हुआ था।

कुछ समय बाद पुनः एक बार सब संत वहाँ गए तो क्या देखा – वहाँ किसी भी प्रकार का कोई जल धारा का स्रोत तक नहीं था... कहाँ से आया जल...? कुछ अता-पता नहीं... आज तक उस तपस्वी महापुरुष की लीला को कोई नहीं समझ पाया। ऐसी अनेक लीलायें प्रत्यक्ष रूप में संतो – महापुरुषों ने स्वामी जी की देखीं।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੌਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-34

चल पड़ी गरीब की चक्की...

एक भक्त जिसकी आर्थिक स्थिति बड़ी कमजोर थी। वह गरीब चक्की चलाकर आटा पीसता और अपना जीवन निर्वाह करता था। रोजी रोटी कमाकर परिवार का पालन पोषण किया करता था।

एक बार उसकी चक्की चलाने की मशीन खराब हो गई। वह बड़ा चिन्तित हो गया कि अब वो अपना गुजारा कैसे करेगा? उसके पास इतने पैसे भी नहीं थे कि वो अपनी चक्की मशीन बनवा सके। किसी प्रकार गुरु महाराज जी की कृपा हो तो चक्की मशीन चल पड़े – ऐसा भाव लेकर वह रात में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की दरबार 'श्री अमरापुर स्थान' पर पहुँचा। दरवाजा बंद हो चुका था। उसके मन में गुरुदेव के प्रति सच्ची करुण पुकार थी और वह सच्चे हृदय से मुख्य द्वार पर तेज स्वर में श्री गुरु महाराज जी को पुकारने लगा – 'ओ स्वामी टेऊराम बाबा- २..! मुझ गरीब की पुकार सुन..... मेरी चक्की चला दे..... मैं बहुत गरीब हूँ..... चक्की मशीन बनवाने में असमर्थ हूँ। बिना चक्की के जीवन निर्वाह कैसे होगा? परिवार कैसे पालूँगा? आप तो दयालु हैं – सभी पर दया करते हैं। मुझ गरीब पर भी कृपा करो। मैं तो आपका नाम सुनकर ही आया हूँ। आप ने सभी के मनोरथ सिद्ध किये हैं..... जो भी जैसी पुकार लेकर आया है, वह पूरी हुई है..... आपके द्वार से आज तक कभी कोई खाली नहीं गया है।' दर तो मैंने बहुत देखे- पर मगर – तेरे दर की महिमा अपरम्पार है...

वह भक्त ऐसी कारुणिक पुकार दरवाजे पर कर रहा था। अंत में जाते – जाते स्वामी जी को अपना समझ कर अपनत्व भरे स्वर में कहता गया, कि— ‘ओ बाबा – साईं टेऊराम! अगर कल मेरी चक्की न चली न, तो तेरी दरबार भी नहीं चलेगी.....’ ऐसी विश्वास भरी पुकार करके वह भक्त अपने घर चला गया.....

अंतर्धामी सर्वशक्तियों के मालिक युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने उस अनोखे भक्त की सुन ली पुकार... प्रातःकाल दुकान खोलकर उसने सच्चे हृदय भाव से स्वामी जी को पुकार की और 'सत्नाम साक्षी-2' महामंत्र बोल कर अपनी चक्की मशीन चलाई तो क्या देखा, 'अरे। चक्की चालू हो गई.....' वह बड़ा गद्गद हो गया। श्री गुरु महाराज जी की ऐसी आश्चर्य जनक शक्ति देखकर वह खुशी से नाचने लगा। उस गरीब की खुशी का ठिकाना ना रहा। मन ही मन स्वामी को कृतज्ञ भाव से बार - बार प्रणाम करने लगा। धन्य धन्य हैं मेरे बाबा टेऊराम जी महाराज ! कैसे चली चक्की - किसने चलायी - उसकी लीला वो ही जाने! अब तो उसका विश्वास और भी अधिक दृढ़ हो गया। वह अब नित्य प्रति श्री गुरु महाराज जी की दरबार 'श्री अमरापुर स्थान' के दर्शन - सेवा करने जाया करता था।

ऐसी होती है – महापुरुषों की अनन्य कृपा। भक्त सच्चे हृदय व करुणा भाव से पुकार करे – तो सतगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज उनकी पुकार अवश्य सुनते हैं और उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-37

साईं दिना की अफीम आदत छुड़वाना

संत - महात्माओं की कृपा से अनेक जीवों का जीवन सँवर जाता है। जीवन जीने की कला भी संत - महापुरुष ही सिखाते हैं। संतों के उपदेश व उनका सानिध्य मनुष्य का जीवन परिवर्तित कर देते हैं। कैसा भी मूढ़ - अज्ञानी, पापी, व्यसनी क्यों ना हो - जो संत शरण ले लेता है..... उसका जीवन उज्ज्वल हो जाता है !

साईंदिना नाम का एक सरकारी कर्मचारी था। वह सरकारी जंगल की रखवाली करता था। किन्तु कुछ बुरी आदतों (नशीली वस्तुओं) का आदी हो गया था। इन खराब आदतों के कारण घर – परिवार वाले व स्वयं भी बहुत परेशान रहता था। इन दुर्व्यसनों पर सरकारी वेतन भी पूरा खर्च कर देता था पर क्या करता, कहावत सत्य ही है – ‘आदत बुरी बला है।’ बुरी आदत से कैसे बचे ? अफीम का सेवन छोड़ता तो बीमार पड़ जाता... अपनी इस दर्दशा से मन में बड़ा दुःखी होता था। इस कारण उसका पूरा परिवार भी बहुत परेशान था।

एक समय करुणा सागर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज उस शहर में पहुँचे, जहाँ वह रहता था... उसी शहर में श्री गुरु महाराज जी का सत्संग – प्रवचन हुआ। वहाँ के सभी नर – नारी स्वामी जी के सत्संग से प्रभावित हुए। सारी संगत मार्मिक सत्संग से स्वामी जी की ओजस्वी अमृतवाणी में पापकर्म से बचने व पुण्य कर्म, शुभ कर्मरूपी प्रसंग सुनकर भाव विभोर हो गई। इससे वहाँ भक्तजनों में श्री गुरु महाराज जी के प्रति अगाध श्रद्धा जागृत हो गई। उसी सत्संग सरोवर में एक दिन ‘साईंदिना’ भी बैठा था।

- सत्संग समाप्ति के बाद साईंदिना रुदन भाव से स्वामी जी के पास जाकर प्रार्थना करने लगा- ‘हे फकीर साईं! मेरे में अनेक बुरी आदतें हैं। मुझे अफीम खाने की लत लग गयी है और मैं इससे छुटकारा भी पाना चाहता हूँ। हे साईं! आप कृपा करो... जिससे मेरी यह बुरी आदत छूट जाए... मैं अपना जीवन अच्छी तरह व्यतीत करना चाहता हूँ... मेरा यह जीवन व्यर्थ जा रहा है। हे प्रभु! दया करके मेरा जीवन सँवार दो.....’

उसके दिल से निकली पुकार स्वामी जी ने सुन ली... महापुरुषों का जीवन दूसरों के उद्धार के लिए ही होता है। उस समय स्वामी जी भजन की मस्ती में मस्त बैठे थे। तब स्वामी जी ने 'खबड़' (जंगली पौधा) के पत्ते मुड़ी भर कर दे दिए और कहा – 'जिस समय अफीम खाने की इच्छा हो तो उस समय ये दो-तीन पत्ते खा लेना... प्रभु करेगा, आप बीमार नहीं पड़ोगे....' बस! फिर तो महापुरुषों का आशीर्वाद रूपी प्रसाद मिल गया और गुरु कृपा से साईंदिना का सब नशा – पता धीरे – धीरे छूट गया। वह एकदम स्वस्थ हो गया। तब वह मुसलमान स्वामी जी से 'नाम दान' की दीक्षा लेकर शिष्य बन गया और साथ ही आश्रम की खूब तन – मन से सेवा करने लगा।

संत – महापुरुषों की हर बात में कोई न कोई राज होता है। वे सर्व शक्ति सम्पन्न होते हैं। कब किसके ऊपर महापुरुषों का आशीर्वाद बरस जाए... साधारण व्यक्ति की समझ से परे है। एक जंगली पौधे से अफीम जैसी बुरी आदत को छुड़ाने का सामर्थ्य तो संत – महापुरुषों के पास ही हो सकता है। उनकी अद्भुत लीला को समझ पाना बड़ा मुश्किल है।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-38

निष्ठा व विश्वास से प्राप्त हुए – पार्वती को दो पुत्र

एक समय की बात है. सिन्ध प्रदेश में आवतराम नामक का एक प्रेमी रहता था। जो कि युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का शिष्य था। उस जमाने में यह एक प्रतिष्ठित परिवार था। आवतराम को विवाह हुए बहुत वर्ष बीत चुके लेकिन उसे संतान सुख प्राप्त नहीं हुआ। अनेक उपाय किये, डॉक्टर, वैद्य- हकीम सबसे इलाज करवाया पर कोई लाभ नहीं हुआ। सब सुख प्राप्त थे लेकिन संतान सुख न होने के कारण उसका पूरा परिवार इसके लिए दुःखी रहता था। आवतराम की धर्मपत्नी का नाम पार्वती था। एक दिन वह अपनी धर्मपत्नी से कहता है- पारी! हमें विवाह किए बहुत समय हो गया है अभी तक कोई संतान नहीं हुई है, हमने सभी उपाय कर लिये पर सब व्यर्थ हुए हैं। हमारी इतनी धन-दौलत, सम्पत्ति का वारिस कौन होगा? यह कहाँ जाएगी? संतान नहीं हुई तो हमारा वंश भी समाप्त हो जाएगा। अतः मेरी इच्छा है कि अगर तुम्हारी सहमति हो तो मैं दूसरी शादी कर लूँ। इस हेतु आवतराम के पिता ने भी पार्वती को कहा- बेटी, तुम इसके लिए आवत को इजाजत दे दो। इतना सुनकर पार्वती रोते हुए अपने पति से कहती है कि मेरे होते हुए घर में आपकी दूसरी पत्नी आये, यह मुझसे कैसे सहन होगा? घर में शांति रखना चाहते हो तो दूसरी शादी मत करना। किन्तु आवतराम अपनी बात पर अड़ा रहा।

पार्वती का अपने गुरुदेव श्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज में पक्का विश्वास व अटूट श्रद्धा थी। उसने अपने पति से कहा- अच्छा, मेरी एक बात मानो, मुझे एक बार स्वामी जी के पास ले चलो। फिर आपको जो अच्छा लगे, वैसा करना...

अब आवतराम अपनी धर्मपत्नि को साथ लेकर प्रातःकाल सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के पास पहुँचे। पार्वती गुरुदेव भगवान के श्रीचरणों में बैठकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी... महाराजश्री उस समय समाधिस्थ थे। आवाज सुनकर आँखें खोली और पूछा, माता! आप कौन हो? तब पार्वती ने ज़वाब दिया- स्वामी जी! भाग्यहीन आपकी दासी पारी हूँ...

जब पार्वती ने ऐसा कहा तो ये बात महाराजश्री के दिल को चुभ गई। एकदम गंभीर हो गये। तुम ऐसा क्यों कह रही हो?

पार्वती ने कहा- स्वामी जी! क्या बताऊँ.... आपका जो पुत्र आवतराम है न, वह मेरे होते हुए दूसरी पत्नी घर में ला रहा है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे पुत्र प्रदान

कीजिए। यदि पुत्र नहीं देते हैं तो मेरी जीवन लीला समाप्त कर दें। मेरे मरने के बाद जैसा इन्हें अच्छा लगे वैसा करें... परन्तु मेरे होते हुए दूसरी पत्नी घर में न लाये। ये मेरे से सहन नहीं होगा। इतना कहकर पार्वती श्री गुरुदेव भगवान के श्रीचरणों में गिरकर ज़ोर-ज़ोर से रुंदन करने लगी... संत-फकीर महापुरुषों के यहाँ से कोई निराश लौटे यह कैसे संभव हो सकता है?

इतना सुनकर महाराजश्री मौन और गंभीर हो गये। कुटिया के बाहर आये। उनके आभायुक्त-तेजोमय मुखमण्डल को देखकर सभी संत विस्मय में पड़ गये। उस समय महाराज श्री के साथ अनेक संत-महात्मा भी थे। स्वामी जी इन संतों का बड़ा मान रखते थे। संतों से कहा- भाई, ये पुत्री फरियाद लेकर आयी है औलाद के लिए... आप सभी संत प्रातःकालीन पल्लव -प्रार्थना करो जिससे इसे संतान की प्राप्ति हो... तब संत-महात्मा सोचने लगे- स्वयं 'महाराजश्री' सर्वसिद्ध समर्थ हैं, ईश्वरीय अवतार हैं न जाने कितनों की मनोकामनाएँ पूर्ण कर दी हैं और आज हमारा मान बढ़ाने के लिए हमें 'पल्लव' पहनने के लिए कह रहे हैं। तब एक संत ने कहा- हम सब 'पल्लव' = प्रार्थना तो कर देते हैं बाकी आपकी लीला आप जानें। सन्तान देना न देना तो आपका कार्य है। आप स्वयं मालिक हैं। इतना सुनकर 'महाराज श्री' मंद-मंद मुस्करा दिये। स्वामी जी ने कहा- आप सभी संत-महात्मा पल्लव-प्रार्थना करो, बाकी परमात्मा सब भली करेंगे। महापुरुषों की प्रार्थना सार्थक हुई। समय पाकर उस माता पार्वती को दो संतानों की प्राप्ति हुई। ऐसा होना चाहिए, गुरु के प्रति दृढ़ विश्वास! निष्ठा-विश्वास के साथ प्रातःकालीन श्री गुरुदेव को की गई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती। जो कार्य भगवान भी करने में असमर्थ होते हैं वह कार्य संत-सद्गुरु अपनी तपस्या भक्ति-साधना के प्रभाव से फलीभूत कर देते हैं। भगवान भी उन संत-महात्माओं का मान रखते हैं और कार्य-मनोरथ पूर्ण कर देते हैं।

ऐसे थे भक्त वत्सल, सिद्ध समर्थ, परम हितकारी सद्गुरु श्री स्वामी टेऊराम जी महाराज!

शत्रु-शत्रु नमन - धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

इतना सुनकर महाराजश्री मौन और गंभीर हो गये। कुटिया के बाहर आये। उनके आभायुक्त-तेजोमय मुखमण्डल को देखकर सभी संत विस्मय में पड़ गये। उस समय महाराज श्री के साथ अनेक संत-महात्मा भी थे। स्वामी जी इन संतों का बड़ा मान रखते थे। संतों से कहा- भाई, ये पुत्री फरियाद लेकर आयी है औलाद के लिए... आप सभी संत प्रातःकालीन पल्लव -प्रार्थना करो जिससे इसे संतान की प्राप्ति हो... तब संत-महात्मा सोचने लगे- स्वयं 'महाराजश्री' सर्वसिद्ध समर्थ हैं, ईश्वरीय अवतार हैं न जाने कितनों की मनोकामनाएँ पूर्ण कर दी हैं और आज हमारा मान बढ़ाने के लिए हमें 'पल्लव' पहनने के लिए कह रहे हैं। तब एक संत ने कहा- हम सब 'पल्लव' = प्रार्थना तो कर देते हैं बाकी आपकी लीला आप जानें। सन्तान देना न देना तो आपका कार्य है। आप स्वयं मालिक हैं। इतना सुनकर 'महाराज श्री' मंद-मंद मुस्करा दिये। स्वामी जी ने कहा- आप सभी संत-महात्मा पल्लव-प्रार्थना करो, बाकी परमात्मा सब भली करेंगे। महापुरुषों की प्रार्थना सार्थक हुई। समय पाकर उस मातापार्वती को दो संतानों की प्राप्ति हुई। ऐसा होना चाहिए, गुरु के प्रति दृढ़ विश्वास! निष्ठा-विश्वास के साथ प्रातःकालीन श्री गुरुदेव को की गई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती। जो कार्य भगवान भी करने में असमर्थ होते हैं वह कार्य संत-सद्गुरु अपनी तपस्या भक्ति-साधना के प्रभाव से फलीभूत कर देते हैं। भगवान भी उन संत-महात्माओं का मान रखते हैं और कार्य-मनोरथ पूर्ण कर देते हैं।

शत्रु-शत्रु नमन - धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 39

ऐसो को उदार जग मांहीं....

संत – महात्मा का अवतार तो जीवों की रक्षार्थ हेतु होता है। संत – महात्मा अपने उदार चित्त से असंख्य जीवों का कल्याण करते हैं। इसी प्रकार युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज भी बहुत उदार चित्त वाले थे। जो भी उनकी शरण में आता, उनका जीवन ही सँवर जाता था।

एक समय भगवद् स्वरूप सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज टण्डेआदम सिन्ध के आश्रम में विराजमान थे। स्वामी जी अधिक से अधिक भगवद् भक्ति में निमग्न और ध्यानस्थ होकर ब्रह्मचिंतन में स्थित रहते थे। अनेक सेवादारी आश्रम में सेवारत रहते थे।

उस समय एक बुजुर्ग माता श्री गुरु महाराज जी के पास आई और हाथ जोड़कर कहने लगी 'स्वामी जी! मुझे आज अपने वस्त्र धोने की सेवा दें...' स्वामी जी उस माता से कहने लगे - 'आप आश्रम की सेवा करो... आश्रम की सेवा यानी हमारी सेवा है। किन्तु बार - बार विनती करने पर स्वामी जी ने अपने वस्त्र उस माता को धोने के लिए दे दिये।

स्वामी जी के वस्त्र धुलाई की सेवा प्राप्त करके माता बड़ी प्रेम विह्वल हो गई... बड़ी प्रसन्नचित्त होने लगी। गद्गद् होने लगी। प्रेमानुरागी होकर माता ने बिना कुछ सोचे – समझे वस्त्रों को देखा भी नहीं... बस! खुशी के आँसू छलकाते असीम प्रसन्नता से प्रेम पूर्वक वस्त्रों को धो रही थी। किन्तु थोड़ी देर बाद माता जी का हाथ वस्त्र (चोले) के जेब की ओर लगा... देखा तो उस वस्त्र में 10 रुपये का नोट पड़ा हुआ था। माता जी ने नोट निकाला तो वह पूरा खराब हो चुका था (उस समय 10 रुपये की कीमत बहुत अधिक हुआ करती थी)। ' यह देखकर उसे बहुत पछतावा होने लगा। अरे! मुझसे ये क्या हो गया? बहुत बड़ी भूल हो गयी – बिना देखे ही जल्दी जल्दी मैंने वस्त्र धो दिये..... बड़ी दुःखी होने लगी..... अपने आपको कोसने लगी..... सोचने लगी, स्वामी जी ने पहली बार मुझे अपने वस्त्र दिये और ये मैंने क्या कर दिया। ऐसा सोच सोच कर वह बिचारी बहुत रोने लगी।

किन्तु महापुरुषों के लिये सांसारिक वस्तुओं व पैसों का क्या मूल्य! ये सब तो तुच्छ वस्तुएँ हैं। वे तो सर्व शक्तिमान थे। माता जी का तो अनन्य प्रेम था। प्रेम में पैसों का मूल्य नहीं होता।

अब माता डरते-डरते श्री गुरु महाराज जी के पास आई और कहने लगी, स्वामी जी! मुझे क्षमा कर दो। मैंने बिना देखे, सोचे – समझे वस्त्र धो लिये। उसमें आपके चोले की जेब में रखा दस का नोट भी खराब हो गया। मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। मुझे माफ कर दो.....’

तब स्वामी जी बड़े ही स्नेहसिक्त प्रेम भाव से कहा – अरे! माता! बस, इतनी सी बात – मात्र 10 रुपये के लिये इतनी चिन्ता करती हो... संसार में धन – पदार्थों का महत्व नहीं, प्रेम का महत्व है। ये क्षणिक वस्तु है। ये तो आती जाती रहती है। आपका स्नेह व प्रेम देखकर हम बहुत प्रसन्न हैं। तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। सदैव प्रसन्नचित्त रहो।’ ऐसे में मुख से निकल पड़ता है – ‘ऐसो को उदार जग मांहि.....’ माता गद-गद हो गई।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 41

**कहाँ से आते थे-आसन के नीचे से पैसे-
उसकी लीला वो ही जाने**

एक समय सिद्ध समर्थ युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज टण्डाआदम (सिंध) में स्थित श्री अमरापुर दरबार (डिब्र) पर विराजमान थे। उस समय दरबार के भण्डारी संत प्रेमदास थे। वे साँयकाल रोज सीधा-सामान लेने शहर जाते थे। उस सामान के लिये वे पैसे स्वामी जी से लेकर जाते थे। स्वामी जी तो थे फक्कड़ बाबा.... उन्हें पैसों से क्या काम.... वे तो जिस आसन पर विराजमान होते थे उसी आसन को ऊपर करके संत प्रेमदास से कहते-जितने पैसे चाहिये, उठा लो.... प्रतिदिन का ऐसा ही नियम सा बन गया था। कौन समझे महापुरुषों की अद्भुत रहस्यमयी लीलाओं को.... हम जिन्हें साधारण मनुष्य समझते हैं वे तो ईश्वरीय अवतार होते हैं। न जाने कब, कौन सी लीला रच दें, ये हम नहीं समझ सकते। बड़े विलक्षण एवं दुर्लभ योगी होते हैं ये संत-महापुरुष!

एक समय क्या हुआ कि संत प्रेमदास नित्यनियम से शहर जाने के लिये युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के स्थान पर आये.... देखा कि स्वामी जी अपने आसन पर नहीं हैं। शायद किसी कार्यवश कहीं गये होंगे। शाम का समय था, शहर जाने के लिये देर भी हो रही थी। ऐसा विचार कर ही रहे थे कि इतने में कुछ साधु-संत भी वहाँ पहुँच गये। संतों ने प्रेमदास से पूछा कि आप यहीं खड़े हो, बाजार नहीं गये क्या? तब संत प्रेमदास जी ने कहा- बाजार तो जा रहा हूँ। लेकिन स्वामी जी से आज्ञा लेनी थी और कुछ पैसे भी लेने थे इसलिए श्री गुरु महाराज जी की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

काफी समय तक इंतजार के बाद संतों ने पूछा- आपको स्वामी जी पैसे कहाँ से देते हैं तो प्रेमदास जी ने कहा- स्वामी जी तो जिस आसन पर विराजमान होते हैं उसी आसन के नीचे से पैसे निकाल कर देते हैं। अगर ऐसी बात है तो चलो हम आपको वहाँ से पैसे निकाल कर दे देते हैं..... देरी होने के कारण हम स्वामी जी से कह देंगे और बता भी देंगे.... देखिये यहाँ अब कैसी लीला होती है जिसे समझ पाना बड़ा मुश्किल....

अब सारे संत-महात्मा स्वामी जी की कुटिया में आये। जहाँ आसन था वहाँ से चादर को ऊपर उठाया तो कुछ नहीं मिला, पूरा बिस्तर उठाया फिर भी कुछ नहीं मिला, चटाई उठाई लेकिन एक भी पैसा नहीं मिला..... सब एक-दूसरे को प्रश्नवाचक निगाहों से देखने लगे..... परस्पर चर्चा करने लगे कि यहाँ तो कुछ भी नहीं है.... तो फिर स्वामी जी पैसे कहाँ से देते हैं? आखिर जैसे पहले आसन बिछा हुआ था वैसे ही पुनः आसन बिछा दिया गया। इतने में सर्वशक्तियों के मालिक स्वामी जी भी आ गये। सभी नत् मस्तक हुए। सारा वृत्तान्त सुनकर स्वामी जी मन्द-मन्द मुस्कराने लगे। स्वामी जी ने कहा- चलो भाई हमारे साथ! आपको माँगने नहीं आता। स्वामी जी अपने आसन पर आये और चादर ऊपर करके संत प्रेमदास से कहा- लो जितने पैसे-रुपये चाहिये... यहाँ से उठा लो और बाजार से शीघ्र सीधा-सामग्री ले आओ.... इससे पूर्व सभी संतों ने देखा था चादर के नीचे कुछ नहीं था। अब कहाँ से आ गये पैसे.... यह अचरजमयी लीला देखकर सभी अचम्भित रह गये.... कहने लगे- हे भगवन्! यह कैसी लीला! आपकी लीला को समझ पाना बड़ा मुश्किल एवं असंभव!

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

‘ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ’

सद्गुरु स्वामी टेऊराम गुण गाथा- 42

संत उधवदास के पिताजी हुए पूर्णतः स्वस्थ

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज मण्डली सहित पहुँचे चक शहर! उसी संत मण्डली में महाराजश्री के साथ संत उधवदास जी भी थे। वे सदैव स्वामी जी के सत्संग में हारमोनियम बजाने की सेवा किया करते थे। स्वामी जी को उनका हारमोनियम बजाना बहुत अच्छा लगता था! वे भी बड़े ही श्रद्धाभाव के साथ सेवा में तत्पर रहते थे। एक दिन भगवद् की ऐसी लीला हुई कि **संत उधवदास** जी के पिताश्री की तबियत खराब हो गई। उनकी सेवा के लिये अन्य कोई था नहीं... उस समय पिता की इच्छा थी कि उधव कुछ दिन यहाँ रुककर मेरी सेवा करे। जब पिता ने उधवदास को रुकने के लिए कहा- तो उन्होंने कहा- मैं स्वामी जी की आज्ञा के बिना यहाँ कैसे रुक सकता हूँ? किन्तु पिता ने उधवदास को रुकने के लिए बहुत जोर भरा.... आखिरकार उधवदास- स्वामी जी के पास आये और प्रार्थना कर कहने लगे कि स्वामी जी! मेरे बाबा (पिताजी) अत्यंत अस्वस्थ हैं और मुझे कुछ दिन रुकने के लिये कह रहे हैं। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं यहाँ कुछ दिन रुककर पिता जी की सेवा करूँ।

स्वामी जी को उधवदास का हारमोनियम बजाना अच्छा लगता था और उस समय दूसरा कोई अच्छा हारमोनियम बजाने वाला यात्रा के दौरान नहीं था। तब देखो- तपस्वी समर्थ महापुरुष क्या कहते हैं- आपके रुकने का कारण आपके पिताजी का ठीक होना है न! तो कोई बात नहीं.... भगवान सब ठीक करेंगे.... सो आपके पिता का स्वास्थ्य ठीक करने की जिम्मेवारी हमारी है.... अतः आप किसी भी प्रकार की कोई चिन्ता न करें। ईश्वर सब भली करेंगे।

युगपुरुष-कर्मयोगी महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज द्वारा कहा वाक्य सत्य सिद्ध हुआ। श्री गुरुदेव भगवान की कृपा से जितने दिन भी ज्ञान सत्संग सरिता चक में चलती रही, तब तक किसी भी प्रकार की कोई पीड़ा उनके पिताजी को नहीं हुई और धीरे-धीरे वे पूर्णतः स्वस्थ हो गये और उसी बीच वे स्वामी जी से आशीर्वाद लेने सत्संग में आने लगे। अर्थात् संत-महापुरुषों की वाणी कभी व्यर्थ नहीं होती। जो कह दिया वह अटल सत्य! वे ईश्वरीय शक्ति के अतुल्य भण्डार होते हैं। अगर हमारे विश्वास में दृढ़ता हो तो सकल काम सिद्ध और पूरे होते हैं। अतः हमें भी दृढ़ विश्वास रखकर श्री गुरुदेव भगवान की शरण में जाना चाहिए।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 43

भर गया रुपये-पैसों से घट.....

एक समय खण्डू में रहने वाले किसी विधवा माता के यहाँ उनका कुलगुरु भेंटा में रुपये-पैसे की दरकार लेकर आया। उन्होंने माता से २५ रुपयों की माँग की। इस पर माता ने बोला- मैं स्वयं दुःखी और गरीब हूँ, मेरे पास इतने पैसे कहाँ हैं, जो मैं आपको दे सकूँ। कुलगुरु ने गरीबनिवाज समर्थ सर्व शक्ति मान् युगपुरुष सद्गुरु श्री स्वामी टेऊराम महाराज जी का बहुत नाम यश-कीर्ति सुन रखी थी कि जो भी उनके द्वारे जाता है वह कभी खाली नहीं लौटता.... तब कुलगुरु ने माता से कहा- माता! आपके गाँव में तो सिद्ध समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज जैसे महान् युगपुरुष रहते हैं। वे तो ऋद्धि-सिद्धि के मालिक- दुःखहर्ता, विघ्न विनाशक प्रभु परमात्मा के स्वरूप हैं। उनके यहाँ से कोई भी खाली नहीं लौटता। वे सभी की मनोकामनाएँ पूर्ण कर देते हैं। उनके होते हुए आप गरीब हैं। आप उनके पास जाओ तो सही- सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा। अन्न-धन के भण्डार भर जायेंगे। इतना सुनते ही माता कहने लगी- आप किसकी बात कर रहे हैं- टेऊराम की.....! अरे वह तो खुद ही कंगला है! स्वयं घर-घर भिक्षा माँग कर खाता है। वह भला मुझे क्या दे सकता है। देखा.....यह है नादानी! उसे यह नहीं मालूम, जिस अवतारी महापुरुष के लिये वह कह रही है, वह कितनी बड़ी शक्ति के मालिक हैं। अज्ञानी जीव इस बात को आसानी से नहीं समझते और भूल कर बैठते हैं। अब देखो यहाँ परमात्मा की कैसी लीला होती है। उसी समय अन्तर्यामी श्री गुरुदेव भ्रमण करते हुए उसी माता के घर आ पहुँचे। यह देखकर माता आश्चर्यचकित हो गई और थोड़ी भयभीत भी हो गई पर करुणा की साक्षात् मूर्ति स्वामी टेऊराम जी महाराज ने बड़े ही स्नेह भाव से पूछा- माता! क्या आपने हमें याद किया? बोलो माता! कोई काम है? कोई हमारे लायक सेवा हो तो अवश्य ही कहो? जिसे वह माता कंगला समझ रही थी... अब उनके सामने कुछ बोल भी नहीं पा रही थी और वहाँ खड़े कुलगुरु स्वामी जी के दर्शन कर बड़े गद्गद् होकर स्वामी जी की यह अचरजमयी लीला देख रहे थे। अब यहाँ देखें- कौन सी लीला करते हैं लीला पुरुषोत्तम सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

जिसने भी याद किया स्वामी टेऊराम को । पाया उसी ने सचे सुखधाम को ।।

मेरे स्वामी टेऊराम को.....

स्वामी जी ने माता से कहा-माता! तुम्हारे घर में जो मटका रखा है, जाओ उस मटके का ढक्कन हटाकर देखो- खाली है या भरा हुआ... माता दौड़ी-दौड़ी उस मटके के पास गई। ढक्कन खोलते ही क्या देखती है, पूरा का पूरा मटका रुपये-पैसों से भरा हुआ है। पहले यह मटका खाली था अब कैसे भर गया? उसे सहसा विश्वास ही नहीं हो रहा था ये सब कैसे? विस्मित होकर कहने लगी- इतने सारे पैसे? अब क्या जवाब दे! समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ? क्षमायाचना के लिए भी कैसे कहूँ। मुझसे तो बहुत बड़ी भूल हो गई है। मैंने इतने बड़े महापुरुष के लिए ऐसा कहा- बार-बार पश्चाताप करने लगी। स्वामी जी! मुझे क्षमा कर दो.... मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। क्षमा व करुणा की पावन मूर्ति **सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज** ने उस माता को आशीर्वाद दिया और कहा कि कभी भी किसी संत-महापुरुष को भला-बुरा या कोई अपशब्द मत कहना। संत-महात्मा तो सारे जहाँ के मालिक होते हैं। फक्कड़ों की जिन्दगी जी कर परमात्मा को रिझाते हैं। उनके लिए सांसारिक वस्तुओं का कोई मूल्य नहीं। आज के बाद कभी भी किसी संत-महात्मा की निन्दा नहीं करना। वे सर्व शक्तियों के मालिक एवं ईश्वर के अवतार होते हैं। इतना कहकर स्वामी जी चले गये।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥
ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥
ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥
ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥
ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 46

मूलो मस्त की प्रेमा भक्ति

निश्चल मन से मिलत है, निश्चल आत्म राम ।

टेऊं मन निश्चल करे, पाओ सुख का धाम ॥

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का एक भक्त था 'मूलो मस्त' जो बड़ा ही सीधा सादा और भोला भाला! जिसमें किसी प्रकार का कोई छल- कपट-अभिमान नहीं... अपनी मस्ती में मस्त....

निर्धन-गरीब था पर विचार भावों का अमीर.... युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रति था अनन्य श्रद्धा भाव। नित्य प्रति श्री अमरापुर दरबार का दर्शन करना व सद्गुरु महाराज जी के चरण स्पर्श करना। तन-मन द्वारा दरबार की जितनी सेवा होती बड़े भाव से सेवा करता.... निर्मल व शुद्ध भाव.... मुख पर सदैव भगवान व गुरुदेव का नाम- धन गुरु टेऊँराम.... धन गुरु टेऊँराम....

एक समय भक्तिभाव में उसने स्वामी जी से कहा- स्वामी जी, आप हमारे घर भोजन खाओ.... घर पर माँ और वह स्वयं केवल दो जने थे। अब उस भक्त के घर पर था भी कुछ नहीं, पर भाव बहुत था। स्वामी जी ने कहा- भाई! हमारे साथ तो बहुत संत-महात्मा हैं। उसने कहा- स्वामी जी, बिस्कुट खाओ.... पानी पीओ.... कुछ भी खाओ.... बस! आप हमारे घर आओ जरूर.... स्वामी जी ने भी उस भोले भाले भक्त का प्रेम देखकर कहा- चलो, हम कल तुम्हारे घर भोजन खायेंगे। वह भक्त खुशी से गद्गद् हो गया। घर में कुछ न होते हुए भी कोई चिन्ता नहीं। बस, उसे तो खुशी थी कि स्वामी जी मेरे घर आयेंगे। अब देखो भक्त का मान रखने के लिये स्वामी जी कैसी लीला करते हैं? उसके घर चलने के एक दिन पहले उसके पास एक सेठ साहूकार आया और उस भक्त को पैसे व राशन सामग्री देकर कहा, हमने सुना है कल आपके घर संतों का भोजन भण्डारा है तो संतों का भण्डारा मेरी तरफ से कर देना। कौन समझे ऐसे दिव्य महापुरुषों की विचित्र लीला को....

दूसरे दिन स्वामी जी ने संत मण्डली को कहा- चलो, आज हम मूलो मस्त के घर भोजन प्रसाद पायेंगे.... संतों ने कहा- स्वामी जी! उस मस्त के पास कुछ भी नहीं है.... आपने उसके घर भोजन कैसे मान लिया? अब कौन समझे अन्तर्यामी स्वामी जी की लीला को.... स्वामी जी ने कहा- जिसके घर हम भोजन खायेंगे, वहाँ पहले ही इंतजाम कर दिया है.... आज हम उसी मूलो मस्त के घर ही भोजन खायेंगे.... स्वामी जी की आज्ञा से संत मण्डली पहुँची मूलो मस्त के घर....

उस गुरु भक्त की प्रसन्नता का कोई कोई ठिकाना नहीं। रास्ते में जय-जयकार करने लगा.... पुष्पों की वर्षा करने लगा.... घूमने- नाचने-गाने लगा.... धन गुरु टेऊँराम.... धन गुरु टेऊँराम.... सतनाम साक्षी..

सभी संत महात्माओं व युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज को बड़े स्नेह भाव, आदर सम्मान के साथ घर पर लेकर आया और बड़े ही प्रेमभाव से सेवा करके भोजन प्रसाद खिलाया और तो और भोजन में भी अनेक प्रकार के व्यंजन.... ये सब तो ठीक पर पास- पड़ौस में सभी को भोजन प्रसाद खिलाया। ऐसा कौतुक देखकर सभी संत आश्चर्य में पड़ गये कि इस मस्त के पास इतना भोजन कहाँ से आया....कैसे इतने भोजन का इन्तजाम किया! ऐसी अचरजमयी लीला देख कर सब आश्चर्यचकित रह गये.... कौन समझे महापुरुष की लीला को! भक्त का मान रखने के लिये स्वामी जी ने यहाँ कौन सी लीला रची जिसे कोई नहीं समझ पाया....

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

उदारचित्त व गरीबनिवाज

S. M. R.

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 48

गौरीशंकर की हो गई कंचन काया

अचानक एक खबर मिली... लालाजी भागते- दौड़ते स्वामी जी के पास आये और बोले कि हे प्रभु! अभी- अभी समाचार मिला है कि गौरीशंकर जिससे पूरनीबाई का विवाह होने वाला है उसे जलोदर की बीमारी है.... डॉक्टर ने कहा कि ये छह महीने मुश्किल से जीवित रहेगा.... स्वामी जी! मेरे सिर पर तो दुःख का पहाड़ टूट पड़ा है। अब आप ही मेरी लाज बचाइये.... आपकी आज्ञा हो तो रिश्ता तोड़ दें; क्योंकि यहाँ रिश्ता जोड़ने के बाद तोड़ना बहुत ही मुश्किल काम है और आपकी आज्ञा हो तो विवाह कर दिया जाय.... इतना सुनकर गुरुभक्त स्वामी सर्वानन्द जी ने कहा कि हमें **यहाँ गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने भेजा है**, हमें उनसे आज्ञा लेनी पड़ेगी। इस पर लाला जी ने कहा कि स्वामी जी, कहाँ रावलपिंडी और कहाँ टंडाआदम.... आप जायेंगे तो कब लौटेंगे.... कल तो शादी है। यहाँ आपको पता ही होगा कि उस समय संचार व यातायात के साधन तीव्रगामी नहीं हुआ करते थे।

स्वामी जी ने कहा- आप घबराओ मत, हम यहीं कुटिया में बैठे हैं, हम श्री गुरुदेव भगवान से शीघ्र ही आज्ञा लेकर आते हैं.... एक व्यक्ति बाहर दरवाजे पर खड़ा रहे.... जब कुंडी हिले तब दरवाजा खोलकर आना, जो आज्ञा मिलेगी वो आपको सुनाएँगे.... अन्तर्मन की तार गुरुदेव से सदा जुड़ी होने के कारण स्वामी सर्वानन्द जी ने योग शक्ति द्वारा टंडेआदम पहुँचकर सारी बात सद्गुरु महाराज जी को बताई। तब सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने ध्यान लगाया व फरमाया कि **‘शादी कर दी जाय, ईश्वर सब भली करेंगे’**। लगभग एक घंटे बाद कुंडी हिली.... दरवाजा खोला गया, श्री गुरुदेव की आज्ञा मिल गई, शादी हो गई। रात को कमरे में सेजा पर दोनों आमने सामने बैठे.... गौरीशंकर की आँखों में पश्चाताप के आँसू बह रहे थे कि मैंने ऐसी सुशील कन्या के साथ धोखा किया है और पूरनीबाई के मन में एक ही बात चल रही थी कि गुरु महाराज जी, हे दीनानाथ! मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है, आपको ही दया करनी है और मेरे पतिदेव के दुःख दूर करने हैं... **प्रातः चार बजे स्वप्न में गौरीशंकर को एक दरवेश जिसका लम्बा चोला, बड़ी दाढ़ी, एक हाथ में डंडा, एक हाथ में चिप्पी (कमंडल) था, वो आये, और बोले- गौरीशंकर... आपको कौन-सी बीमारी है, जहाँ जहाँ बीमारी है, वहाँ वहाँ हाथ लगाते जाओ और वो फकीर चिप्पी से जल निकालकर सत्नाम साक्षी.... सत्नाम साक्षी.... कहकर जल का छीटा लगाते जा रहे थे.... उस बाबा के मुख मण्डल पर अद्भुत तेजोमय आभा थी.... बस फिर क्या था, जल का छीटा लगते ही मेरी सारी बीमारी दूर होकर काया कंचन के समान हो गई। गौरीशंकर जैसे ही उस फकीर के पाँव छूने के लिए आगे बढ़ा तो वे अर्न्तध्यान हो गये.... आँखें खुल गईं, पूरनीबाई को जगाया, बोला मैं जाग रहा हूँ या स्वप्न देख रहा हूँ.... नई दुल्हन आश्चर्यचकित होकर बोली रात ही रात में ये कैसा चमत्कार हो गया.... पति परमेश्वर ने सारी बात सुनाई.... दोनों ने मिलकर प्रातः ५ बजे स्वामीजी के कमरे का दरवाजा खटखटाया, स्वामी जी को सारी घटना सुनाई व कहा कि वो आप थे, तब स्वामी सर्वानन्द जी ने कहा कि वो मैं नहीं... खण्डू वाले वो हमारे गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज थे जिन्होंने स्वप्न में आकर आपके दुखड़े दूर किये....**

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 50

गुरुकृपा से हुआ असाध्य रोग दूर

{ दिलगीर हो न दिल मेरे, दिलासा फकीर का। सभ गल सतार पड़ता, पाछा फकीर का।।
जिस पर नज़र फकीर की, सो पातशाह है। सो कभी न भुखा रहता, प्यासा फकीर का।। }

एक समय गुरु महाराज जी के प्यारे, भाई मूलचन्द मोदी की बहिन जो कि शरीर की पीड़ा से अत्यंत व्यथित थी। उसके हाथों में कोई असाध्य बीमारी हो गई थी, जो कई महीनों तक तरह-तरह का इलाज कराने के बाद भी छूट नहीं रही थी। भाई मूलचन्द मोदी और उसकी बहन का युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज में अटूट विश्वास और श्रद्धा थी। उन्हें जब कभी भी कोई दुःख-दर्द सताता तो बड़े श्रद्धा विश्वास के साथ स्वामी जी को याद करते थे। विश्वास में बड़ी शक्ति होती है। 'विश्वासं फल दायकम्' विश्वास से सर्व मनोरथ सिद्ध होते हैं। गुरुदेव को तो भगवान से भी अधिक जानना चाहिये। जो कार्य करने में भगवान भी असमर्थ होते हैं वे सिद्ध महापुरुष गुरुदेव सहजता से पूर्ण कर देते हैं। ऐसा ही उस मूलचन्द मोदी की बहन के साथ भी हुआ। वह बार-बार सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज को याद कर रही थी। स्वामी जी से वेदना भरे स्वर में प्रार्थना कर रही थी- स्वामी जी, मेरा दुःख दर्द दूर कर दो... अन्तर्यामी घट-घट वासी श्री गुरुदेव भगवान ने उसकी भावभीनी पुकार सुन ली... अब यहाँ देखो- स्वामी जी कौन सी लीला करते हैं- उस बहन ने स्वप्न में देखा कि कोई महापुरुष उससे कह रहा है कि आपके हाथ श्री अमरापुर स्थान (डिब्रू) पर जाने से ठीक हो जाएँगे... महापुरुषों का वचन कभी मिथ्या हो नहीं सकता, चाहे वो स्वप्न में ही क्यों नहीं कह रहे हों...

किस वक्त कौन सी लीला करते हैं संत-महापुरुष! उनकी लीला वो ही जानें... बस फिर क्या था- प्रातःकाल जागकर नवस्फूर्ति के साथ इस स्वप्न की बात भाई मूलचन्द मोदी को बताई। मन में पक्का निश्चय रखकर भाई मूलचन्द और उसकी बहन दोनों श्री अमरापुर दरबार (डिब्रू) पर श्री गुरुदेव भगवान के पास आये। उस बहन ने अपने रोगग्रस्त हाथ स्वामी जी को दिखाये और स्वप्न वाली पूरी वार्ता भी स्वामी जी को कह सुनाई... स्वामी जी तो स्वयं अन्तर्यामी थे- कौन सी लीला कैसे करनी है, कैसे दुःखों से मुक्ति दिलानी है, ये सब जानते थे। उस बहन ने बड़ी श्रद्धा विनम्रता से स्वामी जी से कहा- हे गुरुदेव! हमें तो आपके ऊपर पूर्ण दृढ़ विश्वास है, आप ही मेरे दुःख हरेगें... आपके कृपाशीर्वाद से मेरे हाथ ठीक हो जाएंगे...

स्वामी जी ने कहा- पुत्री! आप 'खरबत' नाम की एक जड़ी-बूटी आती है उसे घोटकर पीयो और उसका बचा हुआ शेष भाग (छाछ) हाथ पर बाँध दो... ऐसा कुछ दिन करते रहो... प्रभु परमात्मा सब ठीक करेंगे... महापुरुषों द्वारा बतलाया गया सत् संदेश अमृत का काम करता है। जीवन दान देने वाला होता है। जड़ी-बूटी के साथ-साथ उस समय कहा हुआ वचन **अमृत प्रसाद** होता है। उस समय महापुरुषों की रमझ-अलौकिक मस्ती अद्भुत और विलक्षण होती है... उस बहन ने वैसा ही किया जैसा श्री गुरुदेव भगवान ने बतलाया था। महापुरुषों की उसके ऊपर महती कृपा हुई, वह शीघ्र ही पूर्णतः स्वस्थ हो गई। इसे कहते हैं संत-फकीरों का कृपा-प्रसाद! जो समय-समय पर भक्तों के ऊपर बरसता रहता है!

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ਸਦਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਭੱਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 51

कुम्भ मेले में देखा औरों देखा चमत्कार.....

तब स्वामी जी ने अपनी छावनी (प्रेम प्रकाश मण्डल छावनी) के चारों ओर लाठी धुमाकर (परिक्रमा कर) अपनी चिप्पी से जल छिड़का और सभी प्रेमियों सत्संगियों से कहा- आप किसी प्रकार की भी चिन्ता न करें और न ही कुटियाओं से कोई सामान बाहर निकालें... सभी **परमात्मा का चिन्तन व सत्नाम साक्षी मंत्र का जाप एवं राम नाम की धुनि लगायें...** प्रभु परमात्मा सब ठीक करेंगे... बस! महापुरुषों के तो कहने की देर होती है, स्वयं भगवान भी संत महापुरुषों के वचनों को नहीं टालते... वह उसे अवश्य ही पूरा करके संतों का मान वर्धन करते हैं.. . अर्थात् सत्पुरुष जब चाहें, जैसा चाहें वह कार्य अवश्य ही सिद्ध कर देते हैं। फिर क्या, थोड़ी देर हुई नहीं कि पश्चिम दिशा से बहने वाली वायु पूर्व दिशा में चलने लगी। धीरे-धीरे अग्नि ने भी शान्त रूप धारण कर लिया। आसपास की झोपड़ियों से आग की लपटें बंद हो गईं सारा माहौल शान्त हो गया... स्वामी जी की ऐसी अद्भुत शक्ति देखकर सभी नत मस्तक हो गये।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

कुँआ जल से लबालब भर गया.....

कूप नीर जब चूक गया, भक्तनि करी पुकार ।

सत्गुरु छींटा मार तब, प्रकट करी जल धार ॥

एक समय की बात है चैत्र मेले का अवसर था। श्री अमरापुर दरबार (डिब्रू) पर विशाल मेला लगा हुआ था। एक ओर भजन ज्ञान-गंगा प्रवाहित हो रही थी तो दूसरी ओर भोजन-भण्डार खुला था... भक्तों की भीड़ का आलम भी बेहिसाब था... आध्यात्मिक भक्ति-ज्ञान से मेले की शान निराली थी। सभी संत-भक्त अपनी सेवाओं में तत्पर.... गुरु दरबार की जल सम्बन्धी जरूरतों के लिए दरबार परिसर में एक कुँआ बना हुआ था और इसी के जल से भोजन भण्डारा भी तैयार हो रहा था कि अचानक इस जल स्रोत कुँए का पानी समाप्त हो गया.... तब भण्डारी मंघरराम और संत सेवाधारी सभी घबराते हुए आये... **सर्व समर्थ अवतारी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज** के पास और प्रार्थना करने लगे- हे प्रभु! कृपा करो, कुँए से जल नहीं आ रहा है.... बिना जल के भोजन भण्डारा कैसे तैयार होगा? इतने सारे भक्तजनों के लिये भोजन बनाना है.... प्रभु! अब आप ही कृपा करो.... जिससे जल की व्यवस्था हो सके....

अवधूती मौज में बैठे थे समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! सारा वृत्तान्त सुनकर उठ खड़े हुए और बोले- चलो, हम जल देवता को प्रार्थना करते हैं.... बस! फिर क्या था....

स्वामी जी आये उस कुँए के पास... जल के देवता वरुणदेव से प्रार्थना की एवं • श्री सत्नाम साक्षी... सत्नाम साक्षी... दो तीन बार महामंत्र अभिमंत्रित कर चिप्पी से जल का छींटा कुँए में डाला.... कुछ क्षण बाद ही उपस्थित सभी संत भक्तजन क्या देखते हैं कि कुँए में जल की गड़गड़ की आवाज आने लगी है.... और कुछ ही देर में देखते-देखते जल से ऊपर तक कुँआ लबालब हो गया। यह आश्चर्य देखकर सभी संत-सेवाधारी विस्मित हो उठे और अगले ही क्षण उनके मुख से निकला- धन गुरु टेऊराम.... धन गुरु टेऊराम....

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 60

बिन सावन बरस पड़ती है – जमकर वर्षा.....

जींय सागर बेअंत आ- तिअ बेअंत फकीर !

जो कम न करे अल्लाह- सो कम करे फकीर !!

एक दिन युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज भक्तिरस की मस्ती में मस्त बैठे थे। कौन जानता है सिद्ध महापुरुषों की अद्भुत लीला! तीव्र गर्मी.... भगवान भास्कर की प्रचंडता.... तपती रेत.... गर्म हवाओं से सभी व्याकुल... मध्याह्न का समय!

महाराजश्री ने संत मण्डली व भक्तों से कहा- चलो अभी हम सब चलते हैं एक भक्त के घर.... सभी संत हैरान! इतनी तीक्ष्ण गर्मी, लू की भरमार.... पर महाराजश्री की आज्ञा थी। योगियों की तरह रमण करने वालों के लिये क्या धूप क्या छाँव.... अपनी मस्ती का आलम....

गर्मी में चलकर सभी - संत हुए बेहाल।

विनती सून गुरुदेव ने - वर्षा की तत्काल ॥

महाराजश्री पूरी मण्डली सहित गाते-बजाते, भक्ति सरोवर में डूबे चलते चले जा रहे उस भक्त के घर की ओर.... पसीने से लथपथ, गर्मी- लू से बैचेन.... तभी साथ में चल रहे सभी भक्तों व संतों ने महाराजश्री को विनम्र भाव से प्रार्थना की- हे प्रभु! गर्मी बहुत हो रही है, सूर्य देवता की तपन भी बहुत है.... हम सभी बड़े व्याकुल हो रहे हैं.... आप कृपा करो कि मौसम ठण्डा हो जाये.... आप तो स्वयं अन्तर्यामी भगवान हैं। **सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज** जो उस समय भी भजनानन्द की मौज में ही थे-

फकीर जी मोहब्बत- फकीर जी रहमत, फकीर राजी- अल्लाह राजी !

तार परमात्म तत्त्व से एकाकार.... भक्ति का अनोखा आलम.... शरीर का भान नहीं.... उस आत्मानन्द के आनन्द को कौन समझे! स्वामी जी ने एकाएक तम्बूरे की तान को छेड़ते हुए भक्ति भाव से गाया एक भजन-

राग जो सांरग तमने छेड़ा- बादल घिर घिर आये ।

पतझड़ दूजे ही पल देखो - सावन सा लहराये ।

सब पे तेरा है अधिकार - तेरी लीला अपरम्पार ।

तेरे हाथ में सारी - सृष्टि की लगाम ॥

भजन में था इतना रस और भाव.... जो इन्द्र देवता भी नहीं रोक पाए अपने आप को.... घनघोर घटा के साथ जमकर बरस पड़े बदरा.... उस वक्त का दृश्य भी अलौकिक था! जिसने प्रत्यक्ष देखा होगा वह ही जाने.... मौसम हो गया सुहावना.... बरस रही थी बरखा रानी.... सभी भक्तों का तन मन हो गया शीतल! ऐसी लीलाओं का वर्णन जीवन-चरितामृत में ३-४ बार आया है। जब-जब भक्तों ने पुकार करी- तब तब वर्षा हुई... महाराजश्री को इन्द्र देवता ने किया प्रणाम.... तो ऐसे थे सिद्ध लीला पुरुषोत्तम अवतारी महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊरामजी महाराज!

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज!

S. M. R.

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

ਸਦਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 63

चोर को बनाया चौकीदार.....

तुलसी अंग ललाट की, मेट सके नहीं राम ।
मेटन को तो समर्थ है, पर समझ लिया है काम ॥

सिन्धु देश के टण्डा आदम में स्थित पावन तीर्थ श्री अमरापुर दरबार (डिब), जहां प्रतिवर्ष लगता था युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज द्वारा स्थापित कुम्भ सदृश विशाल चैत्र मेला.... हजारों श्रद्धालु एवं संत- महात्माओं की जुड़ती थी भीड़ उस ज्ञान सरोवर में डुबकी लगाने.... चहुँ ओर भक्ति का सैलाब! सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का चलता था अखण्ड भजन व भोजन महाप्रसाद.... ज्ञान सरोवर में हर कोई भक्त आता था अपनी-अपनी भावना श्रद्धा लेकर.... कोई मेल-मेलाप करने, कोई संत-महात्माओं के दर्शन व सत्संग श्रवण करने तो कोई आता अपना स्वार्थ सिद्ध करने.... ऐसे ही आया था एक शातिर चोर, चोरी करने.... कुछ नये-नये जूते-चप्पल के जोड़े मिल जायेंगे तो कुछ दिन चल जायेगी आजीविका.... चोरी करना ही उसकी आजीविका का था साधन.... उसकी दृष्टि वहीं घूम रही थी जहाँ पड़े थे नये-नये जूते-चप्पल.... जो मन में होता है उसे वही नजर आता है, उसे और कुछ नहीं दिखता... उसकी दृष्टि उसी ओर घूमती है जहाँ उसका कार्य सिद्ध हो! मेले की भीड़ में अनेक बच्चे होते हैं किन्तु माँ को अपना बच्चा ही दिखायी देता है। चोर को भी अपना स्वार्थ सिद्ध हेतु चोरी कैसे की जाए। धीरे-धीरे मौका देखकर चुराने लगा जूते-चप्पल.... किसी की नज़र न पड़े, उस उद्देश्य से उनको छुपा भी रहा था। किन्तु संयोगवश चोरी करते किसी सेवादारी की दृष्टि उस चोर पर पड़ गई और उसे जूते-चप्पल चुराते हुए रंगे हाथ पकड़ लिया।

चोर पकड़ कर सामने - लाये सेवादार।

कृपा दृष्टि गुरु की भई - बन गया चौकीदार ।।

बड़ा भयभीत.... डरा-डरा सहमा हुआ.... कुछ सेवादारियों ने उसे बहुत डाँटा तो किसी ने उस चोर को मार भी लगाई पर कुछ समय पश्चात् एक सेवादारी ने कहा- चलो, इसे स्वामी जी के पास ले चलते हैं। जैसे स्वामी जी आज्ञा देंगे... वैसा ही करेंगे।

महापुरुषों का आशीर्वाद कब किसके ऊपर बरस पड़े ये कौन जानता है.... संत-महात्माओं के दर्शन व संग से हृदय परिवर्तित हो जाता है। उनके पास तो कैसा भी अधम से अधम व्यक्ति क्यों न आ जाये.... वे तो उसके ऊपर अलौकिक कृपा बरसा देते हैं.... जिससे उसका जीवन परिवर्तन हो जाये और मुरझाये पुष्प की तरह पुनः वो पुष्प खिल उठे.... ऐसी ही

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙ੍ਗਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 66

हरा-भरा हुआ आम का वृक्ष

एक समय श्री अमरापुर दरबार (डिब्रू) पर युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज भ्रमण कर रहे थे। उस समय स्वामी जी के साथ कुछ संत महात्मा व भक्तजन भी थे। ऐसे आगे चलते-चलते उस जगह पहुँचे... जहाँ आम का एक बड़ा पेड़ था। इस वृक्ष में पहले बहुत आम फल लगते थे लेकिन पिछले दो-तीन सालों से इस पेड़ पर आम के फल नहीं आ रहे थे। संत कृष्णदास जी जो सद्गुरु महाराज जी के साथ थे। वे कहने लगे-स्वामी जी! इस वृक्ष को कटवा देना चाहिए, क्योंकि ये दो-तीन वर्षों से फल नहीं दे रहा है जबकि हम इसमें पानी-खाद देकर इसकी अच्छी तरह देखरेख करते हैं पर ये आम नहीं दे रहा.... आपकी आज्ञा हो तो इस वृक्ष को कटवा दिया जाए... व्यर्थ में ही हमें मेहनत करनी पड़ती है।

सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने संत कृष्णदास को धीरज देकर कहा- अरे भाई! वृक्ष को कभी काटना नहीं चाहिए... ये प्रकृति की अनुपम-अद्भुत धरोहर है.... ये हमें फल-फूलों के साथ जीवित रहने को ऑक्सीजन तक देते हैं.... साथ ही हरियाली देकर हमारे मन मयूर को प्रसन्न करते हैं, छाया भी प्रदान करते हैं, वायु को शुद्ध करते हैं.... इन वृक्षों में अनेक गुण होते हैं। आप कहते हो कि ये वृक्ष फल नहीं दे रहे हैं तो हम इनसे कह देते हैं कि ये सबको मीठे फल अवश्य ही खिलाएँगे... उसी क्षण युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने अपनी चिप्पी से जल का छीटा 'सत्नाम साक्षी' कहकर उस वृक्ष पर छिड़का और वृक्ष देवता से कहा- हे वृक्ष देवता! साधु संत लोग आपके आम खाना चाहते हैं, ये आपकी सेवा भी कर रहे हैं, आप तो पर उपकारी हैं, आप सभी को फल देवनहार हैं, आप इन्हें फल खिलाना.... महापुरुषों के मुख से निकला अमृत वाक्य सिद्ध हुआ। सत्नाम साक्षी अभिमंत्रित जल का छीटा फलीभूत हुआ.... महापुरुष द्वारा स्पर्शित अमृत जल-अमृत वचन कभी मिथ्या नहीं हो सकता। स्वयं परमात्मा उसे पूरा करते हैं और साधु संतों का मानवर्द्धन करते हैं।

सूखा आम हरा हुआ, सुन सत्गुरु का ज्ञान ।

रे मन तेरा क्यों नहीं, दूर हुआ अज्ञान ॥

फिर क्या था- अगले वर्ष उसी आम के वृक्ष में बहुत ही अधिक मात्रा में आम के फल लगे... ये देखकर सभी संत महात्मा बड़े प्रसन्न हुए। सभी भक्त संत स्वामी जी का गुणगान करने लगे।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 67

अतिथि – धर्मरक्षक

टण्डाआदम नगर के पूर्व में गुजरानपुरी नामक संन्यासियों का एक बड़ा आश्रम था। वहाँ पर मेला मनाया जा रहा था। युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज को भी वहाँ पधारने के लिये निमंत्रण भेजा गया था।

वरियल वेद नाम का एक भगत जो कि स्वामी जी के पास ठहरा हुआ था, वह भी आचार्य जी के साथ उस मेले में गया था, आचार्य जी ने भगत वरियल वेद को कीर्तन करने की आज्ञा दी... उस मेले में बड़े-बड़े विद्वान, पण्डित, पुजारी, ब्राह्मण और नगर के बड़े-बड़े सेठ लोग भी वहाँ आये थे। उस वक्त जनसाधारण टण्डाआदम को सिंध की काशी कहा करते थे, क्योंकि वहाँ पर बहुत मंदिर एवं सिद्ध स्थल थे। विद्वान ब्राह्मण लोग भी अधिक संख्या में रहते थे। आज्ञा पाकर वरियल वेद ने कीर्तन आरंभ किया... अपने कीर्तन में उसने जो कुछ कहा- उसका मतलब यह था कि भ्रम- संशयों को छोड़कर राम नाम का स्मरण करना चाहिये। भजन को सुनकर पुजारी, ब्राह्मण लोगों का पारा चढ़ गया, वे आग- बबूला हो गये। लाठियाँ और जलती हुई लकड़ियाँ लेकर मंच पर बैठे कीर्तन करते हुए वरियल वेद को मारने दौड़े... अचानक यह आक्रमण (हमला) देखकर भगत वरियल वेद घबरा गया और जिस आसन पर आचार्यजी बैठे थे एकदम उसके नीचे जा छुपा। पुजारी लोग क्रोध के मारे जिनके हाथ-पांव काँप रहे थे, आँखें लाल हो रही थीं, आचार्य जी को कहने लगे कि आप हट जाइये, हम इसको जान से मारेंगे... इतने में आचार्य जी के दो शिष्य उठ खड़े हुए और दूर से ही पुजारियों को ललकार कर कहने लगे कि सावधान! अगर आगे बढ़े या भगत को मारा तो आप लोगों का भी कल्याण कर देंगे। चाहे आप लोग दस-बीस क्यों न हों, पर हम दो ही आप सबके लिये काफी हैं। यह धमकी सुनकर पुजारी लोग डर गये, झगड़ा बढ़ता हुआ देखकर आचार्य जी उठ खड़े हुए, हाथ जोड़कर सबको शान्त करते हुए मर्म भरे शब्दों में पुजारी ब्राह्मणों को कहने लगे कि जो कुछ भगत ने कहा है, उस विषय में यदि आप लोगों को शंका-समाधान करना है तो बड़ी प्रसन्नता से शास्त्रार्थ खुशी से करो, बाकी इस प्रकार अज्ञानियों की तरह झगड़ा-लड़ाई करना संतों-ब्राह्मणों का धर्म नहीं है। यह शोभा नहीं देता... यह भगत वरियल वेद जो कि हमारे अतिथि हैं, आप लोग इसको मार-पीट करें और हम देखते रहें यह तो नहीं हो सकता। यह अतिथि का अपमान नहीं पर हमारा अपमान है। यदि आप लोगों को मारना ही है तो पहले हमें मारो... स्वामी जी के प्रेमास्पद् ये वचन सुनकर पुजारी, ब्राह्मण लोग शान्त हो गये और वे सब लोग अपने अपने स्थान पर चले गए... इस प्रकार से अतिथि की रक्षा की युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने...

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙ਼ਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 68

सिंध देश में रटन के समय शहदादकोट में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज संत मण्डली सहित विराजमान थे। नित्य सत्संग की मौज में इस गाँव के अलावा आसपास के कई गाँवों से लोग आकर सद्गुरु महाराज जी के अमृत उपदेशों को श्रवण करते थे। वहाँ किसी भक्त ने सद्गुरु महाराज जी से आकर कहा- हे प्रभो! इस शहर के लोग माँस मछली अत्यधिक मात्रा में सेवन करते हैं। होली, रक्षाबंधन और दिवाली जैसे पवित्र पर्वों पर उन्हें वध कर, वे स्वयं भी खाते हैं और टिकाणों (एक प्रकार के मंदिर) में भी माँस बनाकर भेजते हैं। इस विषय में आज आप कुछ धर्म उपदेश कीजिएगा। जिससे कि ये सभी पाप कर्म से बच जाएँ एवं मूक प्राणियों की रक्षा हो सके और हम सभी सत्य धर्म का रास्ता अपनाएँ। इस पर स्वामी जी ने सत्संग-प्रवचन किया और बतलाया कि कर्म चार प्रकार के होते हैं।

1. **नित्य कर्म** : जैसे कि प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर स्नान आदि कर पूजा पाठ संध्या वंदन करना, नाम जप करना।
2. **निमित्त कर्म** : किसी के निमित्त दान पुण्य करना या बारह महीने में एक बार करना, जैसे श्राद्ध, होली, दिवाली।
3. **काम्य कर्म** : धन, पुत्र, स्त्री, स्वर्गलोक, इस लोक या परलोक के किसी पदार्थ की इच्छा रखकर शुभ कर्म करना।
4. **प्रायश्चित्त कर्म** : किसी पाप या दुःख की निवृत्ति के लिए कर्म करना।

उनमें से भी निमित्त कर्म जो बारह महीने में एक बार आते हैं, उन पर भूलकर भी माँस इत्यादि का सेवन नहीं करना चाहिए। हमने सुना है कि यहाँ शहदादकोट में लोग बकरे लेकर, उनका वध करवाकर स्वयं भी उनका सेवन करते हैं और टिकाणों (धार्मिक स्थानों) और अपनी कन्याओं के यहाँ भी भेजते हैं। **यह अधर्म और पाप है...** देवी देवताओं, ऋषियों मुनियों और अवतारों के पावन दिवसों पर दान, पुण्य, यज्ञ और उनकी पूजा के बदले किसी जीव के गले पर छुरा चलाकर, यह माँस खाना कितना न नासमझी और पाप का काम है। दान सदैव अच्छे विचार से और अच्छी वस्तु का करना चाहिए... **दान में माँस देना तो बहुत बड़ा अधर्म है।** ऐसा ही स्वामी जी ने बहुत सुन्दर उपदेश दिया। जिसे सुनकर सभी प्रसन्नचित्त हुए....

सद्गुरु महाराज जी ने मुखिया को धन्यवाद दिया और कहा- आप स्वयं विचार कर देखें कि पुण्य की जगह पाप और धर्म की जगह अधर्म कभी करना चाहिए? इसलिए सारी सभा हाथ उठाकर प्रतिज्ञा करे, हम कभी भी ऐसा अधर्मी पाप-कर्म नहीं करेंगे और न ही हम कभी भी माँस मछली शराब आदि का सेवन करेंगे... इस पर सारी संगत ने हाथ ऊपर उठाकर, इस अधर्मी पापकर्म न करने की प्रतिज्ञा की और कहा **आज के बाद हम कभी भी माँस, मछली, अण्डा, शराब आदि का सेवन नहीं करेंगे**। इस पर श्री गुरुदेव भगवान ने सभी को सत्नाम साक्षी... कहकर आशीर्वाद दिया। अभी तक जाने-अनजाने में जो पाप कर्म हो गये हैं उसके लिये भगवान आपको माफ कर देंगे। **अब आगे कभी भी पाप कर्म मत करना**। इस प्रकार अपने अमृत वचनों द्वारा सद्गुरु महाराज जी ने शहदादकोट वासियों एवं अनेक घरों/शहरों में होने वाली पशुबलि से मुक्त कराकर, अधर्मी कृत्य से बचाकर धर्म की राह पर लगाया... ऐसे थे सनातन धर्म के उपासक, अहिंसा के पुजारी, सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

सद्गुरु स्वामी टेऊराम गुण गाथा- 69

अध्यात्म के साथ कर्तव्यनिष्ठ

जीवन मुक्ती संत जन, दिल के बड़े उदार ।
कह टेऊ व्यवहार में, होवत सदा बहार ॥

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के हृदय में वैराग्यवृत्ति की तीव्रता होने के कारण उनके मन की तार सदैव प्रभु परमात्मा से जुड़ी हुई थी और उस समय घर परिवार की स्थिति यह थी कि खाने को भी खाद्यान्न वगैरह घर में नहीं रहता था। श्री गुरुदेव भगवान के भाई श्री टहलराम जी दुकान व खेतों का काम देखते थे। तब भाई टहलराम जी ‘श्री गुरुदेव’ को कहने लगे कि इस वर्ष भी घाटा पड़ने की संभावना है... बगीचों में भी फल नहीं लगे हैं, खेती-बाड़ी भी अच्छी नहीं हुई है और कपास के खेत देखने में तो अच्छे लगते हैं पर अन्दर रुई नहीं है। बाजरे से तो राजस्व (कर) भी पूरा नहीं उतरेगा और दुकान पर भी इतनी कमाई नहीं है। दो हजार रुपये का कर्जा तो पहले से ही है व एक हजार अभी उठाया है, वह भी देना है। (उस समय एक हजार रुपया आज के एक लाख से अधिक ही होगा)। आप तो ग्वाललाल को लेकर भ्रमण करते रहते हो और अब यह बोझा मुझ अकेले से नहीं उठाया जायेगा, अगर आपकी इच्छा हो तो खेती-बाड़ी बेच दें? अगर नहीं तो आप भी कुछ सेवा कार्य देकर यह कर्जा उतरवा लो फिर भविष्य में जैसी आपकी इच्छा....

यह सुनकर ‘श्री गुरुदेव भगवान’ विचार करने लगे कि भाई टहलराम जी का कहना सही है, यदि हम इस समय चले जायेंगे तो लोग कहेंगे कि संत लोग कर्जा चुका न पाये इसलिये यहाँ से चले गये और भाई को भी बहुत चिन्ता होगी। इसलिये समूचा कर्जा चुका कर भाई की चिन्ता को भी मिटाना होगा। फिर इस नगर को छोड़कर, किसी दूसरी जगह बसायेंगे, जहाँ पर जंगल हो, एकांत जगह हो... वहाँ पर डेरा लगायेंगे... इस प्रकार सोच-विचार कर श्री गुरुदेव भगवान ने भाई टहलराम जी को कहा- कि आप निश्चिन्त रहें, ईश्वर सब अच्छा करेंगे। कुछ भी चिन्ता न करें। सब कर्जा चुकाकर ही फिर कहीं जाने का विचार करेंगे।

श्री गुरुदेव जी ने जब खेत खलिहानों का निरीक्षण किया तो देखा कि खेती तो बहुत बढ़िया है परन्तु बालियों में अनाज दिखाई नहीं देता है, कपास के पौधों में भी रुई नहीं है, जो फूल लगते हैं वे भी झड़ जाते हैं। तब स्वामी ग्वाललाल, स्वामी सर्वानन्द, स्वामी गुरुमुखदास को खेती-बाड़ी की सेवा सम्भाल करने की आज्ञा दी, अब आप इसकी अच्छी तरह से देखभाल करें।

कर्तव्यनिष्ठ सच्चे संतों की अमृतवाणी, जिसे प्रभु परमात्मा भी पूरा करने को उद्यत हो उठते हैं। एक ओर महापुरुषों का आशीर्वाद, दूसरा संतों द्वारा सेवा-पुरुषार्थ! बस, फिर क्या था, महापुरुषों द्वारा कहा वाक्य सत्य हुआ। जो खेत खलिहान, जिसमें उपज होने की संभावना नगण्य थी, फिर स्वामी जी के आशीर्वाद से कुछ समय पश्चात् उन्हीं बालियों में बाजरा व अन्य अन्न की

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 70

स्वप्न में किया नारायण भक्त का दुःख दूर

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज सिंध में लोगों को सत्मार्ग पर अग्रसर करने के लिए गाँव-गाँव, कस्बे-शहरों आदि में रटन कर रहे थे। एक बार वे बडाणी शहर में अनन्य सेवक वसणाराम गोबिन्दराम भ्राताओं के यहाँ पधारे।

भाई वसणाराम ने श्री गुरुदेव भगवान से प्रार्थना की, हे प्रभो! मेरे पिता नारायणदास जी को गले में बहुत बड़ा फोड़ा निकला है... जिससे उन्हें बहुत तकलीफ हो रही है... दर्द भी बहुत है। अब आप ही कृपा कर उनके दुःख-दर्द, तकलीफ दूर करने का कोई उपाय बतलाएँ, जिससे उनकी दुःख-तकलीफ दूर हो जाये। आप ही हमारे दुःखभंजन नाथ हैं.... आप हमारे ऊपर कृपा करें.... श्री गुरुदेव भगवान ने उन्हें आज्ञा दी, कि आप अपने पिताजी को हैदराबाद में हमारे प्यारे डॉक्टर सुभाषचन्द्र जी के पास ले जाओ, वे प्रभु परमात्मा के भक्त हैं, उन्हें आप हमारा संदेश देंगे तो वे इनका अच्छी तरह से उपचार करेंगे। आगे ईश्वर सब भला ही करेंगे.... वसणाराम जी ने ऐसे ही किया। गुरुदेव की आज्ञा शिरोधार्य कर डॉक्टर ने गले का ऑपरेशन बहुत अच्छी तरह से किया परन्तु फोड़ा सूख ही नहीं रहा था। तब करुणा भाव से वसणाराम की माता और स्वयं नारायणदास ने मन ही मन में गुरुदेव भगवान को याद किया।

सद्गुरु पूरन पाइया - होया कारज रास।

कह टेऊँ मंगल भया - टूटी जम की फास ॥

उसी रात श्री नारायणदास जी स्वप्न में देखते हैं कि भक्तवत्सल-दुःखहर्ता सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज उनके पास आये हैं और पूछ रहे हैं- फोड़ा कहाँ है? नारायणदास ने गले में हाथ लगाकर बतलाया कि इसमें अढ़ाई हाथ कपास की लड़ी (बत्ती) पड़ी हुई है, वही फोड़ा है, जो सूख नहीं रहा है, बड़ी पीड़ा दे रहा है... उसी क्षण श्री गुरुदेव भगवान ने अपनी कृपा दृष्टि की और उनसे कहा कि **कहाँ है फोड़ा ? हमें तो नजर नहीं आ रहा...वह तो बिल्कुल ठीक हो गया है...** आप किसी प्रकार की भी चिन्ता मन में न करें। कैसे समझें? ऐसे दिव्य महापुरुषों की अलौकिक लीला को.... कैसे ठीक हो गया सपने में वह फोड़ा? सपना सच हो उठा.... वह भी संत-महापुरुष ही जानें.... दूसरे दिन सुबह डॉक्टर ने पट्टी खोलकर देखा तो पाया कि वह कपास की बत्ती तो बाहर पड़ी हुई है और फोड़ा एकदम ठीक हो गया है.... ऐसा आश्चर्य देखकर डॉक्टर भी बड़ा हैरान हो गया और दूसरे दिन ही उन्हें घर जाने की छुट्टी दे दी... तत्पश्चात् सभी श्री गुरुदेव भगवान के पास आए और कहा- हे प्रभु! आपके आशीर्वाद-कृपा से मेरा फोड़ा बिल्कुल ठीक हो गया है और श्री गुरु महाराज जी को दण्डवत् प्रणाम कर उनका आशीर्वाद पाकर घर आ गये।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

श्री गुरुदेव ने बचाई सबकी जान

कह टेऊं भूलत नहीं - हरदम करत सम्भार ॥

हे प्रभो! कल रात बारह बजे, जब हम सब गहरी निद्रा में सो रहे थे कि हमारे मकान के छत की मुख्य लकड़ी टूटने को आ गई, उसके टूटने (क्रेक) की आवाज से हम सब जाग उठे और भयातुर होकर (यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि उस समय छतें लगभग लकड़ी के आधार पर ही रहती थीं।) हम सबने आपको हृदय से बहुत याद किया और दिल की गहराई से प्रार्थना की- “हे गुरुदेव! हमें बचा लीजिए, हमारी रक्षा कीजिए....” इतने में छत की लकड़ी का एक सिरा टूटकर आकर धरती पर आ गिरा और उसका दूसरा भाग, जहाँ पर हम सो रहे थे, धरती से चार पाँच फीट ऊपर ठहर गया। हम लोगों ने ‘सत्नाम साक्षी सर्व आधार, जो सुमरे सो उतरे पार....’ की धुनि लगाई और धीरे-धीरे दरवाजा खोलकर सभी लोग बाहर निकले तो छत की मुख्य लकड़ी का दूसरा छोर भी जाकर धरती पर गिरा... यदि एक क्षण की भी देर हुई होती तो... कहने में भी शरीर भय से रोमाँचित हुआ जा रहा है.... आपकी महिमा अपरम्पार है प्रभु! आप हम सबके रक्षक बन कर इस लोक में तो कृपा कर ही रहे हैं और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप हमारी परलोक में भी इसी प्रकार से रक्षा करेंगे... कृपा करेंगे... यह सुनकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मंद-मंद मुस्कराये और कहने लगे, प्यारे भगत, यह सब प्रभु परमात्मा की लीला है वे ही सब के खेवणहार हैं, रक्षक हैं। आगे भी ईश्वर भली करेंगे। देखिये ईश्वरांश सर्व सिद्धियों ऋद्धियों के दाता सद्गुरु महाराज जी ने किस सहजता के साथ अपने शक्तियों को छुपा लिया। ऐसे भक्तों के रखपाल, ऋद्धि-सिद्धि के मालिक श्री गुरुदेव को बारम्बार वन्दन!

S. M. R.

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 73

मूर्ति पूजा की आवश्यकता

एक बार गुरुदेव ने हिन्दू धर्म के शास्त्रों का प्रमाण देकर मूर्ति पूजा पर उपदेश दिया। ‘**ध्यान मूलं गुरोर्मूर्ति पूजा मूलं गुरु पदम ॥**’ ऐसा सत्संगामृत सुनकर सभी जिज्ञासु बहुत प्रसन्न हुए लेकिन वहाँ कुछ आर्यसमाजी भी उपस्थित थे (गुरुदेव का सत्संग अभेदी व निष्कामी होता था, इसलिए सभी पंथों और समाजों के लोग प्रवचनों का लाभ लेते थे)। तो आर्यसमाजियों को मूर्तिपूजा की बात स्वीकार नहीं हुई (आर्यसमाजी मूर्तिपूजा नहीं करते) कुछ आर्यसमाजी उठकर आचार्यश्री से कहने लगे कि आप ये उपदेश नहीं करें, नहीं तो हम अपना ज्ञानी पंडित बुलाकर आपसे शास्त्रार्थ करवा के मूर्तिपूजा का विरोध करेंगे। आचार्यश्री ने कहा कि आप भले ही पंडित बुलाएँ, हम शास्त्रार्थ को तैयार हैं, लेकिन **सत्य का उपदेश हम बन्द नहीं करेंगे... सत्य तो सत्य ही होता है**। श्री गुरुदेव ने उन सबको बहुत ही गूढ़ ज्ञान से रहस्य उपदेश सुनाए। मूर्तिपूजा के सुन्दर-सुन्दर प्रमाण देकर उपदेश दिया।

सम दम आदिक षट् गुणधारी ।

देखा जग में संत उदारी, सार ग्राही सत् वीचारी

तब श्री गुरुदेव की आत्मविश्वास से युक्त वाणी सुनकर आर्यसमाजी चुप हो गए। लेकिन एक आर्यसमाजी ने श्री गुरुदेव की परीक्षा लेनी चाही। आचार्यश्री को भोजन पर आमंत्रित किया। गुरुदेव के पधारने पर न तो उसने ढंग से आवभगत सम्मान किया और न ही भोजन में नमक डाला और न ही भोजन की यथेष्ट व्यवस्था की... परन्तु गुरुदेव और सारे संत शान्त चुपचाप भोजन खाकर अपने स्थान पर वापस चले आए। वैसे साधारणतः भोजन निमंत्रण देकर इस तरह बिना नमक का भोजन देना और मर्यादित व्यवस्था न करना अपमान ही कहा जाएगा। परन्तु सद्गुरुदेव चित्त से सुख व दुःख में समान रहते थे। सच्चे संतों का ये लक्षण भी है- ‘अति कृपालु निःद्रोह चित्त.... सहनशीलता सार...’

वैसे बिना नमक का भोजन खाना सरल बात नहीं है। परन्तु आचार्यश्री व संत किंचित मात्र भी विचलित नहीं हुए। दूसरे दिन वही आर्यसमाजी पूज्य महाराजश्री के पास २-४ प्रेमियों को साथ लेकर आया और बोला कि मुझे क्षमा करें... मुझसे बड़ी भूल हो गई। मैं आपकी परीक्षा ले रहा था कि आपमें कितनी सहनशीलता है। आचार्यश्री ने मुस्कराकर कहा कि आप कोई चिन्ता न करें। हमें इस बात का कोई विचार या दुःख नहीं है हम तो केवल परमात्मा की बन्दगी करते हैं, उसी में ही निमग्न रहते हैं। इस प्रकार से सनातन हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु समय समय पर अनेक सत्संग प्रवचन करके मूढ़ लोगों को जागृत कर परमात्मा की सत्ता का भान करवाया... भगवत के प्रति भक्ति-आस्था-विश्वास जाग्रत किया। सच्चे संत मान अपमान रहित होकर कार्य करते हैं। ऐसे थे सहनशील, कृपानिधान श्री गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ- 74

जो जैसा बीज बोयेगा – वैसा फल पायेगा

बीज आक का बोय के - करत आम की आस।

कह टेऊँ संसार में - जाको मूरख तास ॥

एक समय देशारटन करते हुए युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज सदाशिव की पावन नगरी काशी नगरी में पहुँचे। काशी में पूज्य गुरु महाराज जी ने एक सिंधी धर्मशाला में डेरा डाला। उस समय धर्मशाला के सेवादारी भाई किशनचंद जी थे, जो कि स्वामी जी का दर्शन कर बहुत ही प्रसन्न हुए। उन्होंने हाथ जोड़कर स्वामी जी से कहा- हे प्रभो! हमारी काशी नगरी के भाग्य जगे हैं जो कि आपने स्वयं आकर दर्शन दिये हैं.... स्वामी जी ने कुछ दिन वहाँ रहकर भजन- सत्संग की सरिता बरसाई....

एक दिन स्वामी जी ने काशी नगरी की महिमा गाते हुए कहा- कि यह सदाशिव की नगरी सदा पूजने योग्य है... सभी शास्त्रों, संत-महात्माओं ने इस नगरी की अपार महिमा गाई है। यह सारे भारत में सनातन धर्म विद्या का निकेतन है। इस नगरी में साधु-संत, ब्राह्मण, ऋषि, मुनि और वैरागी रहते हैं। यह तप एवं वैराग्य की भूमि है। ऐसी पवित्र भूमि में कभी भी पाप कर्म नहीं करना चाहिए जैसे कि मांस, मछली, शराब का सेवन, जूआ, झूठ, कपट, ठगी, हिंसा आदि निषिद्ध कर्म कभी नहीं करने चाहिए।

यह सुनकर भाई किशनचंद जी ने हाथ जोड़कर स्वामी जी से कहा, हे भगवन्! आप जो कुछ भी कहते हैं, वह सत्य है, परन्तु यहाँ काशी में तो अधिक ठगी और पाप होते हैं और माँस मछली का सेवन भी अत्यधिक मात्रा में होता है। यह सब इसलिए कि शंकर भगवान ने काशी को वरदान दिया है कि **“यहाँ पर पापी अथवा पुण्यात्मा, जो भी मरेगा, वह मुक्ति पायेगा...** इसलिए यहाँ के लोगों को पाप कर्म करने से डर ही नहीं लगता।”

स्वामी जी ने कहा, यह बात तो सच है कि काशी नगरी को भगवान शिव जी का वरदान मिला हुआ है। परंतु अज्ञानी जीव उसका अर्थ नहीं समझते... भगवान् का कहना है, कैसा भी जीव, जो अत्यधिक दुर्जन अथवा पापी हो, अंत में काशी में आकर पाप कर्म छोड़कर, शुभ कर्म करे और भगवान का भजन करे तब ही मृत्यु

भक्ति करनी कठिन है.....

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-76

सूखी नहर में पानी लहराने लगा.....

हम आये तव शरण में, राखो हमरी लाज।

कह टेऊं निज दास लख, करिये पूर्ण काज ।।

एक बार कार्तिक मास का समय, युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहरनि गाँव में छह दिनों तक रहे और वहाँ पर सत्संग सरिता में लोगों को अमृतरस का भरपूर पान कराया... सभी भक्तजन गुरुदेव का दर्शन व सत्संग श्रवण करके बड़े ही आनन्दित हुए।

इस गाँव के निवासी खेतिहर थे अर्थात् सबकी खेती बाड़ी हुआ करती थी, इस गाँव में नहर के पानी से ही खेतों में सिंचाई हुआ करती थी कहने का तात्पर्य कि इस गाँव की सिंचाई का मुख्य स्रोत नहर का पानी ही था और उक्त नहर में पिछले कई दिनों से पानी वर्षा न होने के कारण सूख गया था जिससे सारे ग्रामवासी एवं समीप के भी अनेक गाँवों के निवासी पानी न होने से अपनी फसलों की सिंचाई नहीं कर पा रहे थे। फसल सूख गई थी। बहुत नुकसान हो रहा था। इस कारण सभी किसान भाई बहुत दुःखी और परेशान थे।

एक दिन सत्संग सभा में स्वामी जी का स्वागत करते हुए कहरनि गाँव के मुखिया साहब ने स्वामी जी से करबद्ध प्रार्थना करते हुए कहा कि उनके गाँव में नहर का पानी नहीं आ रहा है। जिससे यहाँ के किसान भाई बहुत परेशान हैं। आप ऐसा आशीर्वाद दीजिए कि उसमें पर्याप्त पानी आ जाये और आगे इस तरह की कोई तकलीफ़ न हो... सद्गुरु महाराज जी ने उनकी करुणामय प्रार्थना सुनकर कहा- **‘ईश्वर सब ठीक कर देंगे’**- पूज्यश्री ने ओजस्वी वाणी में पल्लव पाया... और परमात्मा से प्रार्थना की... महापुरुषों की सद्वाणी सार्थक हुई और उस वर्ष भरपूर वर्षा हुई...

सद्गुरु महाराज जी की ऐसी महती कृपा हुई कि कुछ दिनों में ही नहर पानी से लबालब भर गई और बताते हैं कि फिर कभी उस गाँव में पानी की कमी नहीं हुई। वह नहर सदा लबालब भरा ही रहा। चहुँ ओर खुशियाँ छा गई... सभी ग्रामवासी प्रसन्न होकर गुरुदेव भगवान की जय-जयकार करने लगे।

ऐसे परम पूजनीय सत्पुरुष योगीराज सर्व ऋद्धि सिद्धियों के मालिक सर्व जीवों का कल्याण करने वाले आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन-वन्दन!

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

‘ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ’

सद्गुरु स्वामी टेऊराम गुण गाथा-80

दर्शन से किया – चालीहा व्रत पूर्ण

हरि भक्त के संग से हरि भक्ती मिल जाय ।

कह टेऊं हरि भक्ति से, हरि का दर्शन पाय ।

सिंध हिंद के महान् यशस्वी संत, महान कर्मयोगी, युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का इस धरा धाम पर आना और सबके कष्ट-क्लेश मिटाकर हम सबको उस सत्मार्ग की ओर लगाने का समूचा श्रेय माता कृष्णादेवी के चालीस दिवसीय व्रत उपासना को ही जाता है। सर्वप्रथम माता कृष्णादेवी ने ही ४० दिन फलाहार खाकर एवं भगवत् नाम सुमरण कर चालीहा व्रत पूर्ण किया था। चालीसवें दिन स्वप्न में भगवान ने आकर दर्शन दिया और बोले- हम शीघ्र ही आपके घर अवतार लेकर आ रहे हैं.... ऐसा आश्वासन पाकर माता कृष्णादेवी ने ४१ वें दिन उपवास पूरा किया... समय पाकर माता को तपस्या का सफल मिला।

हम सबके हृदय में भी गुरुदेव व प्रभु परमात्मा के प्रति भक्ति-भाव प्रगाढ़ हो। इसी श्रद्धा- प्रेम से आज समूचा संसार जयंती महोत्सव से चालीस दिवस पूर्व ‘चालीहा व्रत उपासना पर्व’ को श्रद्धा भक्ति-भाव से मनाते हैं और इसके लिए विविध धार्मिक आध्यात्मिक सत्कार्य किये जाते हैं।

सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के स्वर्णिम काल का वह मार्मिक प्रसंग, “स्वामी टेऊराम चालीहा व्रत उपासना” तत्कालीन समय में भी भक्तों द्वारा की जाती थी।

एक समय सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज को प्रेमी भक्तों द्वारा पता लगा कि श्री गुरुदेव भगवान के दर्शनों की लालसा हेतु गौसपुर के भाई मन्नाराम की धर्मपत्नी माता पदीबाई ने भी चालीहा व्रत रखा है और वह प्रभु परमात्मा व श्री गुरुदेव का अखण्ड नाम सुमरण कर रही है तथा अपने आप को एक कमरे में बंद करके रखा है। उसका संकल्प है कि जब तक युगपुरुष कर्मयोगी सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के दर्शन नहीं होंगे... तब तक मैं इस कमरे से बाहर नहीं निकलूंगी और व्रत भी चलता रहेगा। बड़ा ही कठोर तप था।

S. M. R.

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੌਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-੮੪

गुरु और शिष्य का स्नेहात्मक अनुराग मिलन

सब अंग फूले फाग ज्यों - देखा दीन दयाल ॥

गुरु व शिष्य का अनोखा व अटूट सम्बन्ध होता है। अगर शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण भाव है तो गुरु भी पूर्ण रूप से शिष्य का आधार बिन्दु होता है। जब एक दूसरे के प्रति स्नेह भाव हो तब शिष्य का गुरु के प्रति और गुरु का शिष्य के प्रति गहरा अतुलनीय सम्बन्ध बन जाता है। शिष्य की स्मृति सदैव श्री गुरु के चरणों में स्थित होती है और गुरु अपने शिष्य की पालना करते हैं। जैसे माता घर का कोई भी कार्य क्यों न कर रही हो पर उसका पूरा ध्यान नन्हें बालक पर टिका रहता है। किसी कारण बालक अगर माँ से दूर भी हो जाए तो माँ का वात्सल्य उसे बच्चे की ओर स्वतः ही खींच लेता है। ऐसा ही गुरु-शिष्य का अनोखा अटूट सम्बन्ध दादा गुरु श्री साईं आसूरामजी महाराज व सद्गुरु स्वामी टेऊरामजी महाराज का था!

एक समय दादा गुरु सांई आसूरामजी महाराज अपने हालाना गाँव में बैठे हुए थे। एकाएक उनका ध्यान स्वामी टेऊँरामजी की ओर गया.... मन ही मन अपने बालवत् शिष्य से मिलने हेतु खण्डू गाँव स्वामी टेऊँराम जी के पास जाने को उद्यत हुए... कहा भी गया है **‘सत्गुरु शिष्य की करत पालना, माता पिता ज्यों बालक की’** तब दादा जी निकल पड़े अपने प्रिय शिष्य की पालना करने... एक ओर गुरु के मन शिष्य से मिलने की उत्कंठा तो दूसरी ओर स्वामी टेऊँराम जी के मन में भी गुरु दर्शन की लालसा, उसी वक्त जाग्रत हो उठी... मन ही मन गुरु दर्शन की लालसा लिये निकल पड़े स्वामी टेऊँराम... जिस प्रकार भगवान को भक्त की और भक्त को भगवान के दर्शनों की हृदय में तीव्र लालसा होती है, उसी प्रकार आज यहाँ भी गुरु को शिष्य की और शिष्य को गुरु के दर्शनों की प्यास खींच रही है, दोनों एक दूसरे से मिलने को आतुर.... हृदय की पुकार हृदय तक... तीव्र उत्कंठा...

दादा साईं आसूरामजी महाराज निकले अपने गाँव से और शिष्य टेऊराम निकले गुरु दर्शनों के लिये अपने गाँव से.... देखो! कितना अनोखा व अटूट सम्बन्ध है। दोनों के मन में थी मिलन की आस, एक-दूसरे से मिलने की आतुरता.... **ऐसा होता है गुरु-शिष्य के हृदय की तार का मिलन....** मार्ग में चलते चले जा रहे थे एक ओर गुरुदेव दादा साईं आसूरामजी और दूसरी ओर स्वामी टेऊराम जी.... राह के बीचों-बीच हुआ गुरु शिष्य का अनोखा मिलन.... दोनों एक-दूसरे को बड़े स्नेह भाव से देख रहे थे... प्रेम विह्वलता छलक रही थी.... गुरुदेव के दर्शन कर स्वामी टेऊराम के प्रेमाश्रु बह चले.... तब निकट पहुँचकर स्वामी टेऊराम अपने गुरुदेव दादा साईं आसूरामजी के श्रीचरणों में नत मस्तक हुए... दण्डवत् प्रणाम किया। गुरुदेव ने स्नेहपूर्वक टेऊराम को गले लगाया। श्री गुरुदेव का अपने शिष्य पर इतना स्नेह, इतना दुलार, इतनी कृपा.... तो ऐसा होता है गुरु और शिष्य का अनूठा- अतुलनीय, अवर्णनीय स्नेहात्मक सम्बन्ध....

S. M. R.

रहमान बना – भक्त रसखान

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

दान में देरी नहीं.....

संत संत के प्राण हैं - संत संत पर ध्यान ।
सबके प्यारे संत हैं - करते सबका मान ।।

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-੮੯

जयपुर में कैसे बना – तीर्थ श्री अमरापुर स्थान

इकतारा हाथ में लिए और संत मण्डली को साथ लेकर भजनानन्द की मस्ती में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज देशारटन करते थे। यत्र-तत्र तीर्थयात्रा एवं जिज्ञासुओं को सत्संगामृत का पान करवाने हेतु चल तीर्थ के समान स्थान-स्थान पर जाकर ज्ञान सरोवर में डुबकियाँ लगवाते थे। जिज्ञासु उस पावन सत्संग सरोवर में स्नान कर अपना जीवन धन्य-धन्य बनाते थे।

ऐसे ही एक समय यात्रा करते हुए हरिद्वार, काशी, दिल्ली, मथुरा वृन्दावन होकर **गुलाबी शहर जयपुर** पहुँच गये... उस वक्त **युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज** का कोई भी परिचित भक्त जयपुर में नहीं हुआ करता था। चाँदपोल दरवाजे के पास हनुमान मंदिर के समीप एक महात्मा की कुटिया थी। संतश्री ने बड़े ही श्रद्धा प्रेमभाव से स्वामी जी को अपनी कुटिया में रहने के लिए स्थान दिया। स्वामी जी सन्त मण्डली के साथ तीन-चार दिन जयपुर शहर रहकर प्रमुख स्थानों के दर्शन किए। एक दिन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज, स्वामी सर्वानन्द जी संत मण्डली के साथ भ्रमण करते हुए स्टेशन की ओर निकल रहे थे... उसी मार्ग में उन्होंने एक सुरम्य जंगल देखा- जहाँ आसपास का वातावरण बड़ा ही मनमोहक एवं वृक्ष पेड़ पौधों से बड़ा ही रमणीक लग रहा था- उसी के बीचों बीच सुन्दर पानी का तालाब बना हुआ था।

स्वामी जी ने कहा कि यह शहर सचमुच मनमोहक है और यहाँ के लोगों में भक्ति भाव व धर्म-कर्म में बड़ी आस्था है... और यह स्थल तो सचमुच में बड़ा ही सुंदर रमणीक है... कहते हैं कि संत महापुरुषों के श्रीचरण जिस स्थान पर पड़ते हैं वह तीर्थ बन जाता है तथा महापुरुष तपस्वियों के हृदय में जो भाव आते हैं वह स्वतः भगवद् प्रेरणा होती है कि इस भूमि पर 'अध्यात्म स्थल' होना चाहिए... संतों की तपस्या का प्रभाव- संकल्प शक्ति श्रीचरण का उस स्थान पर प्रभाव पड़ा और भगवद् प्रेरणा से समय पाकर वह फलीभूत होता है... वहाँ ही तीर्थ श्री अमरापुर स्थान बना!

इस प्रकार सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का मन जयपुर में रमा अवश्य था; किन्तु वे अपने जीवन-काल में फिर जयपुर नहीं आ सके... हाँ, स्वामी सर्वानन्द जी ने इस बात को याद रखा और १९४७ में देश विभाजन के कुछ समय बाद लघु काशी कहने जाने वाले गुलाबी नगरी जयपुर में ही डेरा जमाया... भगवद् कृपा व स्वामी जी के आशीर्वाद से उसी तालाब वाले स्थान पर **श्री अमरापुर स्थान** (पवित्रतम तीर्थ स्थल) बना... जिसे गुरुभक्त स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने बड़े लग्न, परिश्रम से बनाकर सद्गुरु महाराज जी के संकल्प को साकार किया। आज वही पवित्र तीर्थ श्री अमरापुर स्थान, जयपुर श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्यालय है... जो आज विश्व के सुविख्यात तीर्थ स्थलों में माना जाता है... यहाँ पर स्वामी जी का '**समाधिस्थल**' भी बना हुआ है। यह आस्था, अध्यात्म और श्रद्धा का केन्द्र है, जहाँ प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु नत मस्तक होते हैं।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

हृन्दलदास ब्राह्मण बना शिष्य

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਕੌਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-91

भक्त की सुनी पुकार – गुरुदेव आए उसके द्वार

कित सदगुरु, कित दीन मैं - छोले बेचनहार ।

सुन पुकार मण्डली बिना - आये गुरु गमटार ॥

एक सीधा सादा भक्त था युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेजूराम जी महाराज का। मन में थी गुरु के प्रति सच्ची लग्न और सच्चा भाव... नित्य प्रति स्वामी जी के दर्शन करके ही जाता था अपने कार्य क्षेत्र। अनन्य भक्ति का भावुक था वह भक्त... अपनी आजीविका चलाने के लिये वह छोले बेचा करता था। नित्य प्रति गाँव-गाँव छोले ले जाकर बेचता और घर परिवार का पालन पोषण करता था। गरीब था पर मन का सच्चा एवं भावुक...

एक समय किसी क्षेत्र में वह छोले बेच रहा था। सायंकाल का समय था, छोले भी थोड़े ही बचे थे। अकस्मात् वहाँ से युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज संत मण्डली सहित अन्यत्र स्थान पर जा रहे थे। स्वामी जी को देखकर बड़ा ही पुलकायमान हुआ। तुरंत ही मन में भाव जाग्रत हुआ कि स्वामी जी मेरे छोले खायें... पर मन में विचार आया कि स्वामी जी की मण्डली तो बहुत बड़ी है... मेरे पास इतने छोले हैं नहीं, जो मैं सभी को छोले खिला सकूँ... मन ही मन सोचने लगा... अब मैं क्या करूँ... इसी उधेड़बन में था...

छोले खिलाने का मन तो था पर छोले कम थे... उस समय स्वामी जी के साथ ३०-३५ संत-महात्मा व भक्तजन थे। मन ही मन निर्मल स्वच्छन्द भाव से छोले स्वीकार करने के लिए श्री सद्गुरु महाराज जी से प्रार्थना करने लगा।

अर्न्तयामी श्री सद्गुरु महाराज ने सुन ली उस भक्त की भावभरी पुकार... मार्ग में चलते-चलते स्वामी जी अचानक रुक गये। सभी संत सेवाधारियों से कहा- आप सभी चलो, हम कुछ देर में आते हैं... कौन समझे फकड़ महापुरुषों की लीलाओं को... एक दो संतों को रोककर अन्य सभी को आगे भेज दिया।

वह भक्त आँखें बंद करके मन ही मन प्रार्थना में निमग्न था कि साक्षात् परमात्म स्वरूप **सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज** वहाँ पहुँच गये... स्वामी जी ने बड़े ही दुलार से कहा- अरे भक्त! हमें बहुत भूख लगी है, छोले खिलाओ... जैसे ही उस भक्त ने यह सुनकर आँखें खोली- सारे शरीर में खुशी-रोमाँच के मारे सिहरन होने लगी... उस समय के इस अद्भुत दृश्य का बयां करना इस कलम में ताकत नहीं... क्या देखता है- अरे! श्री गुरु महाराज जी! आश्चर्य चकित खशी का कोई ठिकाना नहीं रहा... प्रेमाश्रुओं से आँखें भीग गयीं...

भाव विभोर होकर बार-बार वन्दन करने लगा... उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि स्वामी जी मेरे सामने खड़े होकर मुझसे छोले माँग रहे हैं... इतना प्रेमातुर हो गया कि कुछ समझ ही न आ रहा था कि मैं क्या करूँ... कैसे खिलाऊँ छोले...

जैसे भीलनी, भगवान श्रीराम को देखकर, विदुरजी भगवान श्री कृष्ण को देखकर बड़े भाव विमुक्त हो गये थे
वैसे ही आज स्वामी जी को देखकर उस भक्त की स्थिति हो गई...

‘भीलनी के बेर, सुदामा के तन्दुल, विदुर का साग, कर्माबाई की खिचड़ी’ वैसा भावातुर हो उस भक्त ने स्वामी जी को एक दोने में छोले खिलाए... भक्त के भाव को निहारकर स्वामी जी ने बड़े चाव के साथ धीरे-धीरे खाये वह छोले... वह अनूठा दृश्य-गुरु और भक्त के भाव का, दर्शन करने लायक था... काफी समय तक वह भक्त स्वामी जी के दर्शनानन्द का लाभ लेता रहा... कुछ समय पश्चात् स्वामी जी उस अनन्य भक्त को आशीर्वाद देकर आगे चले गये। तभी कहा गया है- ‘भाव का भूखा हूँ मैं, बस भाव ही इक सार है’। ऐसे थे भक्त वत्सल भगवत् स्वरूप श्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੌਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-93

संत की निंदा करना महापाप

टण्डेआदम का निवासी भाई लालचन्द, जो सदैव सही अर्थों में सच्चे युगपुरुष योगीराज श्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज व संतों की निन्दा करता रहता था; क्योंकि उस समय स्वामी जी के भक्ति-तपस्या की कीर्ति चहुँ ओर तेजी से फैल रही थी... सभी लोग स्वामी जी को अवतारी पुरुष मानते थे। यह बात उससे देखी नहीं जाती थी। अतः संतों को बहुत बुरा-भला कहता रहता था। और संतों की निन्दा करता रहता... संत-महात्माओं की परमात्मा के प्रति अलौकिक मस्ती... उनके लिये क्या निन्दा? क्या यश... वे तो भगवान के बंदे होते हैं। अपनी अलख जगाने में मस्त... उन्हें तो प्रभु परमात्मा में पूर्ण विश्वास होता है। सब कुछ करने कराने वाले परमात्मा ही हैं। कैसा भी दुष्प्रचार करें पर उनके मन में कोई प्रतिक्रिया नहीं, न ही उसके प्रति भले-बुरे का विचार करना....

भाई लालचन्द ने स्वामी जी के लिये उल्टे-सीधे लेख अखबार में छपवाये... जिससे स्वामी जी का अपमान हो, उन्हें नीचा दिखाया जा सके... पर स्वामी जी की अपनी मौज-वैराग्यवृत्ति... मान-अपमान, राग-द्वेष, स्तुति-निन्दा, यश-अपयश सभी वृत्तियों से परे... किसी प्रकार का कोई विरोध प्रदर्शन नहीं... अर्थात् ऐसी बातों पर कोई ध्यान न देना। उधर लालचन्द रास्ते में खड़ा होकर इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि साधु-संतों ने अखबार पढ़कर क्या प्रतिक्रिया की... संत-महापुरुषों ने तो कुछ नहीं कहा! वे तो चुप रहे, पर संत की निन्दा-अपमान भगवान से सहन नहीं होती... वे दण्ड अवश्य ही देते हैं या फिर प्रकृति उसे दण्ड देती है... खण्डू में बाढ़ आना, प्लेग बीमारी फैलना आदि ये प्राकृतिक कोप 'सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज' को सताने का ही परिणाम था...

उसी समय भगवान की ऐसी लीला हुई कि जिस रास्ते पर लालचन्द खड़ा था। वहाँ पर एक भंयकर काले सर्प ने उसे डस लिया... वह उसी रास्ते पर गिर पड़ा... चीखा-चिल्लाया पर किसी ने नहीं सुनी... असहनीय पीड़ा से अत्यधिक व्याकुल... जहर धीरे-धीरे शरीर में फैल रहा था। तभी कहा गया है-

प्रभु किसे नहीं मारता, पापी नहीं है राम ।

आप ही मर जात है, कर कर छोटे काम ।।

भगवान बिना कारण किसी को नहीं मारता, व्यक्ति स्वयं छोटे कर्म करके अपनी मृत्यु को बुलाता है। संत की निन्दा अर्थात् भगवान का अपमान... भगवान अपने संत-भक्तों की निन्दा-अपमान कभी सहन नहीं कर सकते ! उसे दण्ड अवश्य ही देते हैं...

आखिरकार लालचन्द जैसे-तैसे चलकर अपने घर पहुँचा, उसे इस हाल में देखकर घर-परिवार वाले बड़े हैरान हो गये... डाक्टर बुलवाया गया। किन्तु पूरे शरीर में विष फैल चुका था, बचने का कोई उपाय नहीं था। थोड़ी देर बाद लालचन्द की मृत्यु हो गई। **संत की निन्दा करने से भगवान ने उसे शीघ्र ही दण्ड दे दिया...**

सच्चे संत-महात्मा तो सदैव परोपकारी होते हैं। वे कभी भी किसी का बुरा नहीं चाहते और न ही किसी को श्राप देते हैं। परन्तु जो मनुष्य निन्दक है वे स्वयं मृत्यु को बढ़ावा देते हैं।

‘भगवान के घर देर है पर अन्धेर नहीं’ जिनके मन में अभिमान होता है कि ये साधु-संत-फकीर हमारा क्या कर लेंगे... किन्तु उन्हें मालूम नहीं, जो कार्य भगवान न कर सके, वह कार्य सच्चा संत-फकीर कर सकता है... उनके पास होती है तप- तपस्या-भक्ति की अद्भुत शक्ति... वे ऋद्धि-सिद्धि के मालिक होते हैं... वे जैसा चाहें वैसा कार्य कर सकते हैं... इसलिए जीवन में कभी भी किसी दरवेश-फकीर-साधु-संत-मुर्शिद का अपमान नहीं करना चाहिये और ना ही सताना चाहिये। अन्यथा उसका दुष्परिणाम होता है। महापुरुष तो मान-अपमान से परे होते हैं।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

दुःख भंजन पालनहार.....

यह बात उस समय की है जब श्री अमरापुर दरबार (डिब्रू) का निर्माण कार्य चल रहा था। युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की कृपादृष्टि व आशीर्वाद से धीरे-धीरे टीले पर दीवार बनकर तैयार हो गई थी। चबूतरा भी काफी ऊँचा बन गया था। सभी संत सेवाधारी सेवा कार्य में तत्परता से जुटे हुए थे। इसी बीच सेवाधारियों को एक गर्डर ऊपर चढ़ाना था और वे मोटे रस्से की सहायता से गर्डर चढ़ाने लगे। तभी अचानक आधे मन भार का वह लोहे का गर्डर भाई मंघनराम के सिर पर गिर गया... गर्डर गिरते ही भाई मंघनराम लहूलुहान होकर अचेत हो गया और गिर पड़ा... सभी संत-सेवाधारी भयभीत हो गये... किन्तु कहते हैं न- **‘जिसके ऊपर तू स्वामी, सो दुःख कैसा पावे’** जिनके पालनहार-रक्षक स्वयं साथ हों, उसे फिर किस प्रकार की चिंता या भय? तपस्वी महापुरुषों के लिए कौन सा कार्य असंभव... वे तो अपनी कृपादृष्टि से ही सब दुःख दर्द दूर कर देते हैं।

भाई मंघनराम को स्वामी जी के श्रीचरणों में लाकर सुला दिया और सभी संत सेवादारी प्रार्थना करने लगे- हे प्रभु! इसका दुःख दर्द दूर कर जीवन दान देकर बचाइए...

उसी समय स्वामी जी ने अद्भुत लीला रचकर सुरमा मँगवा लिया और जहाँ-जहाँ सिर पर चोट आयी थी? वहाँ सुरमा डालकर अपने वृहद् हस्त से दबाकर अर्थात् आशीर्वाद देकर कसकर पट्टी बाँध दी और तो और जैसे माता बालक को गोदी में सुलाकर दुलार करती है वैसे ही स्वामी जी ने उसे अपनी गोद में सुलाकर चादर पहना दी... महापुरुषों की इतनी रहमत-कृपा हो जाये तो फिर उसका बाल भी बांका कैसे हो सकता है...? कैसा भी दुर्लभ-दुर्गम असाध्य कार्य क्यों न हो, संत महापुरुषों की कृपा कभी निरर्थक नहीं हो सकती... स्वामी जी ने सभी को धैर्य बँधाते हुए कहा- आप चिन्ता न करें... भगवान सब कुछ ठीक कर देंगे...

स्वामी जी के आशीर्वाद का ऐसा प्रभाव पड़ा कि कुछ समय पश्चात् भाई मंघनराम **सत्नाम साक्षी-सत्नाम साक्षी** कहने लगा... फिर स्वामी जी ने देसी घी में आधा तोला हल्दी मिलाकर, मंघनराम को पिलाकर पुनः सुला दिया। स्वामी जी की ऐसी अद्भुत लीला बनी कि एक घंटे के पश्चात् भाई मंघनराम बिल्कुल स्वस्थ हो गया और उठकर सेवा कार्य करने लगा... उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कुछ हुआ ही न हो... सारी पीड़ा समाप्त हो गई... एकदम स्वस्थ हो गया।

सभी संत-सेवाधारी सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की ऐसी अद्भुत अचरजमयी लीला देखकर जय-जयकार करने लगे। स्वामी जी आप धन्य हो... आप साक्षात् ईश्वरीय अवतार हो...

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੌਰਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-੧੮

संत कृपा प्रसाद कभी निरर्थक नहीं हो सकता

आज्ञा गुरु की भंग कर - विचरे जो संसार ।

कह टेऊँ ताँका कभी - होवत न निस्तार ॥

एक समय एक माता जो शारीरिक व्याधि अर्थात् घुटने के दर्द से पीड़ित थी। गुरु दर के प्रति विश्वास भी था उसमें अडिग... युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के प्रति था अटूट श्रद्धा भाव। नित्य नियम से जाती थी सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के दरबार... प्रतिदिन सत्संग श्रवण करना, सेवा करना उसकी आदत में आ चुका था। सुखी सम्पन्न परिवार, किसी भी प्रकार की कमी नहीं थी, गुरु कृपा से सब कुशल मंगल, प्रसन्नचित्त... बस था तो थोड़ा शारीरिक दुःख घुटनों का दर्द... जिससे सेवा करने व चलने फिरने में होती थी बहुत परेशानी...

एक दिन समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज बैठे थे नीम वृक्ष के छाँव तले भजनानन्द की मौज मस्ती में... वृत्ति थी एकाकार, मन की तार जुड़ी हुई थी प्रभु परमात्मा से... सत्पुरुषों की बन्दगी भी अद्भुत होती है, भक्ति की आभा मुख मण्डल पर शोभित, अवधती मस्ती...

उस स्थिति में पहुँच गई वह माता स्वामी जी के पास। सुना दिया अपने घुटने का दुःख दर्द- हे मेरे मालिक! हे कृपानिधान प्रभु! आप दया करो, कृपा करो, मेरे दुःख दर्द दूर करो...

संत-महापुरुषों का क्या... कब किसके ऊपर रहमत कर दें, कृपा कर दें... ऐसी कृपा उस माता के ऊपर भी हुई... स्वामी जी जिस नीम वृक्ष के छाँव तले वैराग्यमयी स्थिति में बैठे थे उसी नीम के वृक्ष की आठ-दस पत्तियाँ माता को दे दीं... जाओ माता! इसे घोट कर पी लेना... परमात्मा की कृपा से सब ठीक हो जायेगा... कौन समझे महापुरुषों की लीला को... एक तो घुटनों का दर्द, जिसमें ठण्डी वस्तु पीना सख्त मना होती है और दूसरी ओर स्वामी जी का कृपा प्रसाद... और नीम वैसे भी बहुत ठण्डी होती है। अब माता नीम के पत्ते घर ले जा रही थी। रास्ते में किसी परिचित व्यक्ति को यह बात बताई, उसने कह दिया- अरे, ऐसा मत करना। नीम और दर्द यह तो विरोधाभास है। नीम का रस तो बहुत ठण्डा होता है यह घुटने के दर्द को और ज्यादा बढ़ा देगा... अभी चलने लायक तो हो फिर बिल्कुल भी चल नहीं सकोगी... ऐसा सुनकर माता का विश्वास डगमगा गया... अब वह सोच विचार में पड़ गई 'क्या करूँ, क्या न करूँ'? कहते हैं '**महापुरुषों द्वारा दिया गया प्रसाद "अमृतफल" होता है**'... वह व्यर्थ नहीं हो सकता... श्रीमद्भागवत में भी संतों द्वारा दिये फल से ही 'गौकर्ण' का जन्म हुआ था। मच्छन्दरनाथ गुरु के विभूति (राख) से 'गोरखनाथ' का जन्म हुआ। ऐसे सिद्ध संतों की वस्तु व वचन निरर्थक नहीं हो सकते... जो कह दिया या जो वस्तु अभिमंत्रित करके दे दी वह '**अमृत**' के समान काम करती है...

उस माता ने दूसरे के कहने पर पत्ते फेंक दिये। किन्तु किसी कारण या लीलाधर की लीलावश तीन-चार पत्ते उसकी पोटली में रह गये। अब माता ने सोचा- चलो! पूरे पत्तों का रस तो नहीं पीऊँगी... ये तीन-चार पत्ते रह गये हैं, इसी का रस निकालकर पी लूँ... क्या मालूम स्वामी जी की कृपा-रहमत हो जाये... 'सन्देह अविश्वास' के कारण ही मनुष्य संत-महापुरुषों को न पहचानने की भूल कर बैठा है।

सिद्ध तपस्वियों का ‘कृपा प्रसाद’ मिथ्या व निरर्थक नहीं हो सकता... उसका फल तो अवश्य ही प्राप्त होता है। फिर क्या था- उस माता ने उन तीन-चार पत्तों का रस निकालकर ‘सत्नाम साक्षी - सत्नाम साक्षी’... कहकर पी लिया। थोड़ी देर के बाद माता को राहत महसूस हुई, दर्द भी कुछ कम हुआ... अब मन ही मन पश्चाताप करने लगी। अरे, मुझसे तो बहुत बड़ी भूल हो गई। मैंने दूसरे के कहने पर नीम के पत्ते फेंक दिये. कहते हैं न “अब पछताय क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत” समय निकल जाने पर पछतावे के सिवाय भी हाथ में नहीं आता! माता पुनः सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के पास आई। स्वामी जी! मुझे माफ कर दो, मुझसे भारी भूल हो गई, मुझे थोड़ा कृपा प्रसाद और दे दो...

सद्गुरु श्री स्वामी टेऊराम जी महाराज ने कहा- माता! अब वह समय-घड़ी-पल निकल गया। उस समय की स्थिति कुछ अद्भुत और विलक्षण थी... वो स्थिति परमात्मा की होती है... जो उस समय संत-महापुरुषों से पा लेता है उसका जीवन स्वतः ही सँवर जाता है... जो रह गया- सो रह गया... कौन समझे ऐसे दुर्लभ योगी सत्पुरुषों को... जिसके ऊपर कृपादृष्टि पड़ गई, वह इस भवसागर से पार हो गया। अतः संत कृपा प्रसाद का कभी निरादर नहीं करें।

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-101

दिव्य सानिध्यता से बनाया नास्तिकों को आस्तिक.....

संसार में प्रत्येक प्राणी अपने गुण, कर्म, स्वभाव को लेकर जन्म लेता है। जन्म जन्मांतरों के संस्कारों के आधार पर कोई नास्तिक विचारों को लेकर उत्पन्न होता है तो कोई आस्तिक विचारों को लेकर उत्पन्न होता है। प्रायः देखा गया है कि संसार में ऐसे लोग बहुत ही कम मात्रा में मिलेंगे जो दैवीय गुणों से भरे हों, वरना अधिकांशतः नास्तिक स्तर वाले ही लोगों की संख्या मिलेगी। धर्मप्राण भारत की भी वर्तमान में ऐसी स्थिति होती जा रही है। किन्तु एक समय वो था, जब सिंधु देश में धर्म का हास हो रहा था, असंख्य हिन्दू लोग अपने धर्म से विमुख होकर अन्यान्य धर्म की ओर उन्मुख हो रहे थे, धर्म का व धार्मिक विधि विधानों एवं शास्त्रों का मखौल उड़ाया जा रहा था, माँस मदिरा, जुआ नशा आदि में ही जिनका जीवन व्यतीत होता था, ईश्वर नाम की कोई चीज है यह तो उनको पता तक नहीं था तभी ऐसे समय में जिस महापुरुष ने सिंध की नैया को पार लगाया वे थे- **युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज !**

जब भी धराधाम पर कोई संबोध प्राप्त सद्गुरु अवतरित होता है, तो अवश्य ही कुछ न कुछ क्रांति होती है.. . आचार्य जी के अवतरण से भी अनंत धर्म कार्य सम्पन्न हुए, उनमें जो सबसे मुख्य था, धर्म विमुख जनता को सही मार्ग पर लाना। इसके लिए उन्होंने सम्पूर्ण सिंध देश की धर्मयात्रा की... यात्रा के दौरान उन्होंने लोगों की दयनीय दशा को देखा, उनकी ऐसी स्थिति को देखकर उनका हृदय करुणा से भर गया। अतः उन्होंने अपने को कष्ट देकर भी उनके उद्धार का बीड़ा उठाया...

इसी संदर्भ में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने लिखा है-

जिसका जीवन पशु समाना, खाना पीना फिरत अजाना

शुभ कर्मों का मार्ग बता तिस, राम का नाम जपाया था

मेरा सत्गुरु टेऊराम जगत में, जीव उबारन आया था

इससे यह प्रतीत हो रहा है कि उन वेद विरुद्ध आचरण करने वाले नास्तिकों को आचार्य जी ने किस प्रकार से आस्तिक बनाना प्रारम्भ किया। नास्तिक का अर्थ है जो वेद विरुद्ध, शास्त्र विरुद्ध आचरण करे एवं ईश्वर की सत्ता में विश्वास न करे, उसे नास्तिक कहा जाता है। आचार्य जी ने ऐसे नास्तिकों को कैसे आस्तिक बनाया, देखें-

सत्संग सुंदर रास रचाए, प्रेम किया प्रचारा

सब जीवों के मन को मोह्या, बंसी मधुर बजाए

स्वामी सत्गुरु टेऊराम आए, जिन सोए जीव जगाए.....

सत्संग व सद् उपदेशों के माध्यम से धीरे-धीरे प्रेम की मधुर मुरली बजाकर उन सोये हुए (नास्तिकों को) जीवों को जगाकर उन्हें हरि के मार्ग में लगा दिया। उनके शुष्क हृदयों को प्रभु प्रेम के मधुर रस से भरकर उन्हें भी प्रभु प्रेमी व सहृदयी बना दिया...

इस प्रकार से हम देखते हैं कि **आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज** का इस सृष्टि के जीवों पर अनन्त उपकार हैं, उनके दिव्य सानिध्यता में असंख्य वीतराग युवक तैयार हुए जिसके माध्यम से सृष्टि का अनंत कल्याण हुआ और हो रहा है...

ऐसी दिव्यात्मा युगपुरुष पूज्य श्री परम गुरुदेव आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज को हमारा शत शत नमन है!

शत-शत नमन- धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-103

चैत्र मेला सिंधी बारहवीं तारीख को ही क्यों.....

संत जनों का दर्श कर, पाओ आत्मराम ॥

मिले मिलाओ मिल रहो, मिले तो मेला होय ।

अन्तर आत्म जे मिले, मेला कहिये सोय ॥

एक समय टण्डा आदम में स्थित श्री अमरापुर दरबार (डिब) पर कुछ संत-महात्मा एवं भक्तजन एकत्रित हुए। उन्होंने स्वामी जी को दण्डवत् प्रणाम किया और हाथ जोड़कर विनती करने लगे कि हे भगवन्! आप तो सैलानी संत हैं... कभी कहाँ तो कभी कहाँ... जीवों के उद्धार हेतु यत्र-तत्र भ्रमण करते हैं... नाम का उपदेश देते हैं। जन-जन के हृदय में ज्ञान का दीप प्रज्ज्वलित कर रहे हैं। अंधकार में डूबे हुए जीवों को सत्पथ की राह दिखाता रहे हैं। चल तीर्थ के समान सत्संग गंगा में स्नान करवा रहे हैं। अज्ञानता की नींद में सोये हुए लोगों को जगा रहे हैं... किन्तु श्री अमरापुर दरबार (डिब) पर अनेक संत- महात्मा एवं श्रद्धालुगण दूर-दूर से आपके दर्शनों के लिये यहाँ आते ही रहते हैं। आप तो सदैव सैलानी हैं अर्थात् भ्रमण करते रहते हैं, और इस स्थान डिब पर आपका रहना बहुत कम समय के लिये ही होता है। इस कारण प्रेमी भक्तजन आपके दर्शनों से वंचित निराश होकर लौट जाते हैं... अतः आपश्री के पूज्य श्रीचरणों में प्रार्थना है कि ऐसे कुछ दिन निश्चित कर दीजिए, जिससे संत, भक्त प्रेमी आपका दर्शन व सत्संग सुनकर अपना जीवन सफल बना सकें...

इस पर स्वामी जी ने सभी संत-महात्मा, सत्संगी प्रेमियों को एक बैठक में प्रस्ताव देते हुए कहा- ‘इस डिब्ब (बालू रेत का टीला) पर चैत्र मास की सिन्धी बारहवीं तारीख को रेत का चबूतरा और झोंपड़ियाँ बनाकर सत्संग का शुभारम्भ किया गया था... अतः चैत्र मास की सिन्धी बारह तारीख से लेकर चार दिन तक संत-महात्मा, भजन मण्डलियाँ, प्रेमी भक्तजन आदि सभी के लिये अखण्ड भजन-भोजन का समागम रखना चाहिए...’

स्वामी जी का यह सुझाव सभी संत-महात्माओं, भक्तजनों ने प्रसन्नचित्त होकर स्वीकार किया। चैत्र मास में बसन्त ऋतु होती है। रातें ठण्डी और सुहावनी होती हैं। गर्मी भी अधिक नहीं पड़ती। **हिन्दू संस्कृति का नव वर्ष भी चैत्र मास से प्रारम्भ होता है...** फसल कटाई होकर इस समय किसान भी फुर्सत में होता है (उस समय सिन्ध में अधिकांश लोग खेती-बाड़ी का कार्य ही करते थे) इसी मास में चेटीचण्ड, रामनवमी, नवरात्रा, हनुमान जयंती आदि पर्व-उत्सव मनाये जाते हैं... अतः इस मास में 'मेला' लगाना अति उत्तम होगा और **इस मेले को 'चैत्र मेला' के नाम से कहा जाये।**

इस पवित्र आध्यात्मिक चैत्र मेले में दूर-दूर के प्रेमी भक्तजन, संतों के श्रीमुख से सत्संग गंगा में स्नान कर लाभ उठा पायेंगे। इस प्रकार 'चैत्र मास की बारहवीं तारीख' को चैत्र मेला प्रतिवर्ष मनाये जाने का निश्चय हुआ...

आज भी सिद्ध तपस्वी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज द्वारा स्थापित कुम्भ सदृश विशाल 'चैत्र मेला' लघु काशी कही जाने वाली गुलाबी नगरी जयपुर के पावन तीर्थ स्थल श्री अमरापुर स्थान (डिब) पर प्रतिवर्ष बड़ी भव्यता एवं श्रद्धा, भक्ति-भाव के साथ मनाया जाता है।

पाँच दिनों तक चलने वाले कुम्भ सदृश चैत्र मेले में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का अखण्ड भजन व भोजन (भण्डारा) ‘लेने वाले बाबा टेऊराम-देने वाले बाबा टेऊराम’ उक्ति को चरितार्थ करता हुआ चलता है। इस अवसर पर असंख्य श्रद्धालुगण ज्ञानसरिता में डुबकी लगाकर अपने जीवन को धन्य-धन्य बनाते हैं। महापुरुषों की इस पवित्र तीर्थ स्थली श्री अमरापुर स्थान (सिद्ध पावन गुरु स्थल) को शत-शत नमन!

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

ਸਦ੍ਗੁਰੂ ਸ਼੍ਵਾਮੀ ਟੇਙੜਾਮ ਗੁਣ ਗਾਥਾ-104

भजन और भोजन तो स्वामी देऊँराम जी का.....

‘यत शास्त्रं प्रमाणं’ अनेक प्रसँग या वृत्तान्तों को जब शास्त्र प्रमाणित करते हैं, फिर वह बात सिद्ध या सार्थक मानी जाती है। किन्तु अगर सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज जैसे तपस्वी सिद्ध महापुरुष के भजन और भोजन की बात करें तो प्रत्यक्षता को प्रमाण की आवश्यकता नहीं..... ‘भजन और भोजन तो सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का’...

कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। अद्भुत 'चैत्र मेला' जिसने भी देखा होगा, उसने हकीकत में माना कि वाकई कोई ऐसी अद्भुत शक्ति है 'सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के भजन और भोजन महाप्रसाद की...' जहाँ चैत्र मेले के पावन अवसर पर प्रतिदिन लाखों भक्त श्रद्धालुगण जयपुर के व्यस्ततम मार्ग एम. आई. रोड पर बैठकर श्री गुरु महाराज जी का भोजन प्रसादी बड़े ही प्रेम श्रद्धा भाव के साथ ग्रहण कर रहे थे... उन्हें इस बात से भी कोई फर्क नहीं पड़ रहा था कि मैं इतना प्रतिष्ठित व्यक्ति हूँ या फलां ऊँची जाति है मेरी, बस! बाबा का प्रसाद जहाँ मिला, वहीं बैठकर प्रसाद पाकर ही जाना है... चाहे लोगों के चरणों की धूल लग रही हो... एक ही भाव कि स्वामी जी का प्रसाद तो खाना ही है... अमीर हो या ग़रीब अथवा हो चाहे किसी धर्म-वर्णाश्रम का, किसी प्रकार का कोई भेद भाव नहीं... मानो कर्ण और कुबेर की तरह अखण्ड भण्डारा प्रसाद लुटा रहे हो... जैसा कि कवियों ने भी गाया है :-

મોક હલી થે મડિદ જી માની, ચારડૈ વર્ણ જમિયા થે જાની ।

मानो कर्ण कृबेर हो दानी, निर्मोही निष्काम ।

ऐसे पूर्ण पुरुषोत्तम, महायोगी, तपस्वी हर कोई नहीं हो सकता... विरले ही महापुरुष थे सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज! जिन्होंने एक और सत्संग गंगा में श्रद्धालुओं को स्नान कराया तो दूसरी ओर अखण्ड भण्डारा प्रसाद चलाया। गुलाबी नगरी के नागरिकगण तो देखते ही रह जाते हैं... वाकई अद्भुत करिश्मा है इस **श्री अमरापुर दरबार के चैत्र मेले का...** जिसने देखा उसकी जिह्वा थकती नहीं महापुरुष- युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के गूण गाते-गाते...

शत्रु-शत्रु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज!

S. M. R.

‘ॐ श्री सत्नाम साक्षी’

सद्गुरु स्वामी टेऊराम गुण गाथा-105

खण्डू गाँव को बचाया बाढ़ के कहर से.....

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज खण्डू गाँव में मरा हुआ कुता उठाकर क्या फेंक आये, पूरे शहर में प्रतिद्वन्द्वियों ने बवाल मचा दिया... तरह तरह से अपमान करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी... बड़ी-बड़ी पंचायत लगाकर स्वामी जी को नीचा दिखाने व दण्ड देने की कोशिशें करने लगे... कई दिनों तक व्यर्थ की पंचायत लगती रही। गुरुमुख लोग स्वामी जी के उपकार की प्रशंसा करने लगे किन्तु पूर्वाग्रही लोग न जाने कैसे कैसे दण्ड दिलवाने की कोशिशें करने लगे... जिससे संत की निन्दा हो व उन्हें नीचा दिखाया जा सके... परन्तु जिसके रखवाले स्वयं प्रभु परमात्मा हैं उन्हें किस बात का भय... वो तो अपनी अवधूती में मस्त..

उसी समय परमात्मा ने एक लीला रची.. सिन्धु नदी में बाढ़ आने लगी... बादल घनघोर होकर मूसलाधार बारिश करने लगे, बिजली चमकने लगी। चहुँ ओर पानी ही पानी... सभी खण्डू वासी भयभीत... सारे गाँव में कोलाहल मच गया। अब क्या किया जाय...? क्षण-प्रतिक्षण सिन्धु दरिया का पानी खण्डू गाँव की ओर बढ़ने लगा... समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाये...?

अनेक सज्जन पुरुषों ने समझाया कि संत-महापुरुषों को सताना नहीं चाहिये पर मनमुखी लोग अपनी बात पर अडिग... सज्जनों ने कहा कि हमें चलकर स्वामी जी से माफी माँगनी चाहिये, ये उन्हें सताने का ही परिणाम है... अगर ऐसा नहीं किया तो हम सब सिन्धु नदी की बाढ़ में समाप्त हो जायेंगे... धीरे-धीरे पूरा शहर व खण्डू गाँव बाढ़ की चपेट में आता जा रहा है... प्रकृति का प्रकोप दिन-प्रतिदिन तीव्रवेग से बढ़ रहा था। आखिरकार जब बचने का उपाय नहीं सूझा- तब जाकर पूरी पंचायत के लोग स्वामी जी की शरण में आये और विनम्रता से कहने लगे- हे प्रभु! हमें क्षमा करो, हमसे बहुत बड़ी भूल हुई है... आप तो बख्शणहार हैं, हमें अभयदान देकर, हमारी रक्षा करें...

स्वामी जी को तो किसी प्रकार का क्षोभ-दुःख तो था नहीं। वे तो परमात्मा की मस्ती में मस्त... सभी खण्डूवासी स्वामी जी के सम्मुख प्रार्थना करने लगे... परमात्मा की माया बड़ी प्रबल है... जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने अनेक बार माँ यशोदा को अपने मुख में चतुर्भुज स्वरूप ब्रह्माण्ड के दर्शन कराये किन्तु माता भगवान के वास्तविक स्वरूप को पहचान न सकी... आपकी लीला अपरम्पार है... इससे पार पाना कठिन है... आपके श्रीचरणों में पंच विनय करते हैं कि जैसे भगवान श्री कृष्णचन्द्र ने गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रजवासियों की रक्षा की थी, उसी प्रकार आप भी सिन्धु नदी की बाढ़ से खण्डू गाँव की रक्षा कीजिये... प्रभु आप ही हमारे खेवनहार हैं...

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

इस पर एक संत ने कहा- ‘यह भगवान का मंदिर है... भगवान तो स्वयं संतों की सेवा करते हैं... वे संतों के सहायक-रक्षक होते हैं... **“मैं संतानि के पीछे जाऊँ”** हम थोड़ी देर विश्राम कर चले जायेंगे।’ इस पर पुजारी क्रुद्ध होकर कहने लगा- ‘ये ज्ञान की बातें हमें न सुनाओ, हम जानते हैं। आप

ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

